जनवरी 2017

दादावाणी

कीमत ₹ 10

विषय में कहीं सुख होता होगा? यथार्थ सुख तो भीतर है, लेकिन यह तो बाहर दूसरों में आरोपण करते हैं (पाँच इन्द्रियों के विषयों में सुखबुद्धि/दुःखबुद्धि) इसलिए वहाँ पर सुख महसूस होता है

संपादक : डिम्पल महेता
वर्ष : 12 अंक : 3
अखंड क्रमांक : 135
जनवरी 2017

संपर्क सूत्र :
त्रिमंदिर, सीमंधरसिटी,
अहमदावाद-कलोल हाइ-वे,
पो.ओ.: **अडालज,**
जि.: गांधीनगर-382421.
फोन: (079) 39830100
email: dadavani@dadabhagwan.org
www.dadabhagwan.org
दादावाणी संबंधी शिकायत के लिए:
8155007500

Printed & Published by
Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation
5, Mamtapark Society,
Bh. Navgujarat College,
Usmanpura, Ahmedabad-14.
Owned by
Mahavideh Foundation
5, Mamtapark Society,
Bh. Navgujarat College,
Usmanpura, Ahmedabad-14.
Printed at
Amba Offset
Basement, Parshvanath
Chambers, Nr.RBI,
Usmanpura, Ahmedabad-14.
Published at
Mahavideh Foundation
5, Mamtapark Society,
Bh. Navgujarat College,
Usmanpura, Ahmedabad-14.
Total 32 pages including cover

सबस्क्रिप्शन (सदस्यता शुल्क)
१५ साल
भारत : ७५० रुपये
यू.एस.ए. : १५० डॉलर
यू.के. : १०० पाउन्ड
वार्षिक
भारत : १०० रुपये
यू.एस.ए. : १५ डॉलर
यू.के. : १० पाउन्ड
भारत में D.D./M.O.
'महाविदेह फाउन्डेशन' के नाम से
संपर्कसूत्र के पते पर भेजें।

दादावाणी

समझ से विलय होती है विषय में सुखबुद्धि

संपादकीय

पंचम आरे के इस दुषमकाल में चारों तरफ विषयाग्नि का ही वातावरण फैल गया है। विषयरस मनुष्य को कब मूर्च्छित कर दे उसका अंदाज़ा लगाना मुश्किल है। पुराने ज़माने में मान, कीर्ति, पैसे सभी जगहों पर मोह बिखरा हुआ था, अब तो पूरा मोह एक मात्र विषय में घुस गया है। इस काल के कुछ लोग ब्रह्मचर्य पालन कर रहे हों, फिर भी कई जन्मों से अंदर विषय रूचि की ग्रंथि पड़ी हुई है, वह संयोग मिलते ही फूट निकलती है।

जब तक *पुद्गल* सुख लेने की दानत पड़ी हुई है, तब तक आत्मसुख का स्पर्श नहीं कर पाता। लोगों ने अज्ञान मान्यता से विषय में सुख का आनंद लिया। लेकिन ब्रह्मचर्य के बारे में उनकी दृष्टि किस तरह विकसित हो ताकि सभी उल्टी मान्यताएँ छूट जाएँ। महामुक्त दशा की प्राप्ति का मूल कारण है स्वरूप भाव ब्रह्मचर्य। यह आवश्यक है कि वह समझ में यथार्थ रूप से फिट हो जाए। विषयसुख की मूर्च्छा कभी भी मोक्ष में नहीं जाने देती लेकिन परम पूज्य दादाश्री यहाँ पर विषय से संबंधित सुख की वास्तविकता बताते हैं जिससे साधक को जागृति आती है, यथार्थ सुख को समझता है और लोकसंज्ञा व अज्ञान मान्यता की वजह से माने हुए विषयसुख में वास्तव में सुख है ही नहीं, इस बात का भान हो जाता है।

कृपालुदेव ने कहा है कि आवरण वाली दृष्टि से विषय में सुख माना गया है। अपरिच्छेद प्रकार से वर्णन किया जाए तो उसमें सुख नहीं है और जिसे इसी देह में आत्मा के स्पष्टवेदन का अनुभव करना हो, उसके लिए शुद्ध ब्रह्मचर्य के बिना इसकी प्राप्ति संभव नहीं है। जब तक ऐसी सूक्ष्मातिसूक्ष्म रोंग बिलीफ है कि 'विषय में सुख है', तब तक विषय के परमाणुओं की संपूर्ण निर्जरा नहीं हो सकती। वह रोंग बिलीफ संपूर्ण सर्वांग चली जाए तब तक समझ से अति-अति सूक्ष्मता से जागृति रखनी चाहिए।

अक्रम विज्ञान में समझ पर बहुत भार दिया गया है। दादाश्री कहते हैं कि समझ में अहंकार नहीं है। समझ से अगर ब्रह्मचर्य का ध्येय बंधेगा तो उसके अडिग मीनार को कोई भी संयोग हिला नहीं पाएँगे और यह समझ सोने की कटार समान है, उसका गलत उपयोग खुद के लिए ही जोखिम वाला हो जाएगा।

अज्ञान के कारण ऐसी जो सुखबुद्धि खड़ी होती है कि 'विषय में सुख है', उस सुख की बिलीफ के परिणाम स्वरूप खुद को परवशता और लाचारी का अनुभव होता है। दादाश्री ने प्रस्तुत अंक में ज्ञान को यथार्थ रूप से समझाकर वैज्ञानिक तरीके से गहराई से यह समझाया है कि उस सुखबुद्धि के सामने जागृति को कैसे सेट करें। सामायिक और प्रतिक्रमण द्वारा बिलीफों को कैसे विलय करें और दोषमुक्त बनें। उनकी क्रियाकारी वाणी से साधक की समझ के द्वार खुलें और विषयरूपी भ्रांतरस संपूर्णत: विलय हो जाए, यही अभ्यर्थना।

जय सच्चिदानंद

पाठकों से...

'दादावाणी' सामायिक में मुद्रित पाठ्य सामग्री मूलत: गुजराती 'दादावाणी' का हिन्दी रूपांतर है। कोष्ठक में दिए गए शब्द या तो अंग्रेज़ी शब्द का अर्थ हैं अथवा शब्द का तात्पर्य स्पष्ट करने हेतु वृद्धित किए गए वाक्यांश है। यहाँ पर 'आत्मा' शब्द को गुजराती और संस्कृत की तरह पुल्लिंग में प्रयोग किया गया है। जहाँ पर भी 'चंदूभाई' नाम का प्रयोग हुआ है, वहाँ पर पाठक खुद को समझें। 'दादावाणी' के इस अंक में अगर आप कोई बात न समझ पाएँ तो प्रत्यक्ष सत्संग में पधारकर समाधान प्राप्त करें। अनुवाद में कोई कमी नज़र आए तो हमें सूचित करने की कृपा करें, ताकि भविष्य में सुधार किया जा सकें । ऐसी क्षतियों के लिए हम आपके क्षमाप्रार्थी है।

समझ से विलय होती है विषय में सुखबुद्धि

समझ से खत्म की जा सकती हैं विषयसुख की बिलीफ

प्रश्नकर्ता : कामवासना का सुख क्षणिक है, ऐसा समझने के बावजूद भी कभी कभार उसकी प्रबल इच्छा होने का कारण क्या है? और उस पर कैसे अंकुश लगाया जा सकता है?

दादाश्री : कामवासना का स्वरूप जगत् ने जाना ही नहीं। कामवासना उत्पन्न क्यों होती है, यदि यह जान ले तो उसे काबू में लाया जा सकता है। लेकिन वस्तुस्थिति में वह कहाँ से उत्पन्न होती है, यह जानता ही नहीं। फिर काबू में कैसे ले सकता है? कोई काबू में नहीं ले सकता। जिसका ऐसा दिखता है, कि काबू में कर लिया है, वह तो पूर्व की भावना का फल है, बाकी कामवासना का स्वरूप कहाँ से उत्पन्न हुआ, उस उत्पन्न दशा को समझ ले और वहीं पर ताला लगा दिया जाए तभी उसे काबू में ले सकते हैं। इसके सिवा भले ही वह ताला लगाए या कुछ और करे फिर भी उसका कुछ चलेगा नहीं। कामवासना नहीं करनी हो तो हम रास्ता दिखाएँगे।

प्रश्नकर्ता : अगर विषय में से विरक्त होने की तीव्र भावना हो, तो फिर क्या उसमें से धीरे-धीरे निकला जा सकता है?

दादाश्री : हाँ। वह जो तमन्ना है, वही इसमें से छुड़वाती है। लेकिन विषय की कीमत समझ लेनी चाहिए कि इसकी कीमत कितनी है? बिगड़ी हुई दाल की कीमत है, बिगड़ी हुई कढ़ी की कीमत है, लेकिन विषय की कीमत नहीं है। लेकिन यह बात पूरे जगत् को समझ में नहीं आती न!

प्रश्नकर्ता : यानी वह तो शून्य हुआ न?

दादाश्री : शून्य तो अच्छा है, लेकिन यह तो निरा माइनस ही है।

इंसान में बैक (पीछे का) देखने की शक्ति ही नहीं है न! इसलिए विषय चलता रहा है। देखो न, ऊपर से रौब से चलते भी हैं न? इसलिए अगर ज्ञानीपुरुष से बात को समझ ले तो विषय जाएगा और मुक्ति होगी। विषय की वजह से ही तो यह सब(मोक्ष) रुका हुआ है।

सही समझ क्रियाकारी होगी

प्रश्नकर्ता : ज्ञान लेने के बाद निराकुलता बरतती है, फिर भी विषय में आसक्ति क्यों रह जाती है?

दादाश्री : विषय तो जानवरों में होते हैं। यह तो सिर्फ आसक्ति ही है। भीतर ऐसा माल भरा है, इसलिए अभी तक उसके मन में श्रद्धा है कि इसमें सुख है। बाकी विषय तो किसे कहते हैं कि जो परवश होकर करना पड़े। द्रव्य-क्षेत्र-काल और भाव के आधार पर परवशता से करना पड़े। जो इन बेचारे जानवरों में होता है।

प्रश्नकर्ता : पहले से अब्रह्मचर्य का माल भरकर लाया है न? तो फिर इस जन्म में क्या करे वह?

दादाश्री : उसे इस जन्म में नये सिरे से समझना चाहिए कि पहले ब्रह्मचर्य का माल नहीं भरा था। अब नये सिरे से यह भरना चाहिए। पिछला जो *गलन* हो रहा है, वह फिर से खड़ा नहीं होना चाहिए।

प्रश्नकर्ता : समझते हैं फिर भी जगत् के विषयों में मन आकर्षित रहता है, समझते हैं कि सही-गलत क्या है, फिर भी विषयों से मुक्त नहीं हो पाते। तो इसका क्या उपाय?

दादाश्री : जो समझ क्रियाकारी हो वही सही समझ कहलाती है। बाकी सब बंजर समझ कहलाती है। अगर दो शीशियाँ हों और एक शीशी में विटामिन का पाउडर हो व दूसरी शीशी में पोइज़न हो, दोनों में सफेद पाउडर हो और हम बच्चे को समझाएँ कि यह विटामिन है, यह लेना और इस दूसरी शीशी में से मत लेना। दूसरी शीशी में से लेगा तो मर जाएगा। उस बच्चे ने 'मर जाएगा' शब्द सुना इसका मतलब यह नहीं कि वह समझ गया। कहेगा ज़रूर कि यह दवाई लेने से मर जाते हैं, लेकिन मर जाना यानी क्या, उस बात को नहीं समझता। हमें उसे बताना पड़ता है, कि फलाँने चाचा उस दिन मर गए थे न? फिर सभी ने उन्हें वहाँ जला दिया था, इस दवाई से वैसा ही हो जाता है। जब एक्ज़ेक्टली (यथार्थ) ऐसा समझ में आ जाता है तब वह समझ ही क्रियाकारी हो जाती है। फिर वह पोइज़न को छूएगा ही नहीं। अभी उसे इस समझ की एक्ज़ेक्टनेस नहीं आई है। लोगों द्वारा सिखाई गई यह समझ तो लोन की तरह है।

प्रश्नकर्ता : वह समझ क्रियाकारी हो, उसके लिए क्या प्रयत्न करने चाहिए?

दादाश्री : मैं आपको विस्तार से समझाता हूँ। फिर वह समझ ही क्रियाकारी हो जाएगी। आपको कुछ भी नहीं करना है। बल्कि आप दखल करने जाओगे तो बिगड़ जाएगा। जो ज्ञान, जो समझ क्रियाकारी हो, वही सही समझ है और वही सही ज्ञान है।

मेरी बात आप पर थोपनी नहीं है। खुद आपको आपकी समझ में आना चाहिए। मेरी समझ मेरे पास और वह समझ आप पर थोप नहीं सकते और थोपने से तो कुछ काम होगा ही नहीं। आपमें वह समझ फिट हो जाए और आप अपनी समझ से चलो।

मूर्च्छा में गंदगी को मसला

प्रश्नकर्ता : विषय में सब से ज़्यादा मिठास मानी है, तो किस आधार पर मानी है?

दादाश्री : वह मिठास जो उसे महसूस हुई और अन्य किसी जगह पर मिठास देखी नहीं है, इसलिए उसे विषय में बहुत मिठास लगती है। अगर देखने जाएँ तो सब से ज़्यादा गंदगी वहीं पर है, लेकिन मिठास की वजह से उसे मूर्च्छा आ जाती है। इसलिए उसे पता नहीं चलता। यदि इस विषय को गंदगी समझे तो उसकी सारी मिठास गायब हो जाएगी।

प्रश्नकर्ता : इसमें सच्चा सुख नहीं है, लेकिन एकदम लिमिटेड टाइम के लिए तो है, फिर भी यह छूटता नहीं है न!

दादाश्री : विषय में इतनी गंदगी है कि जिस पर अगर निबंध लिखना हो तो निबंध लिखने में भी घिन आ जाए। यह तो ठीक है, एक तरह की हैबिट हो गई है। मूलतः अज्ञानता और मूर्च्छा की वजह से गंदगी में हाथ डाला। अब भान में आने के बाद क्या घिन नहीं आएगी? इस बिल्कुल ही

गंदगी वाले सुख को छोड़ देना है। इसे तो गंदगी देखकर ही छोड़ देना है। यदि इस विषय का सुख छोड़ दे तो पूरी दुनिया का मालिक बन जाएगा। वास्तव में तो वह सुख है ही नहीं। यदि कोई बुद्धिमान व्यक्ति इस गंदगी का हिसाब लगाए तो उस गंदगी की ओर जाएगा ही नहीं! अभी यदि केले खाने हों तो उसमें गंदगी नहीं है और उसे खाने में सुख है। लेकिन इसने तो निरी गंदगी को ही सुख माना है। किस हिसाब से मानता है, वह भी समझ में नहीं आता!

विषय का पृथक्करण करने से आता है वैराग

ऐसा है न, कि मनुष्यों ने विषय का तो पृथक्करण करके कभी देखा ही नहीं। यदि मानवधर्म के तौर पर विषय का पृथक्करण करें, जैसे कि हम किसी चीज़ का पृथक्करण करते हैं कि उसमें क्या-क्या चीज़ें मिली हुई हैं, ऐसे अलग करते हैं। उसी तरह यदि विषय का पृथक्करण करे तो मनुष्य कभी भी फिर विषय करेगा ही नहीं। दो दिन से ज़्यादा के बासी पकौड़े खा ही नहीं सकते। फिर भी यदि तीन महीने के बासी पकौड़े खा लिए हों, तो भी वह जीवित रहेगा, लेकिन विषय करेगा तो वह जीवित नहीं रहेगा। विषय, वह ऐसी चीज़ है कि उसका पृथक्करण करे तो खुद को वैराग्य ही रहा करे।

तुझे विषय का पृथक्करण करना आता है?

प्रश्नकर्ता : नहीं, आप बताइए।

दादाश्री : पृथक्करण यानी क्या कि विषय क्या ऐसे होते हैं कि इन आँखों को अच्छे लगें? कान सुनें तो अच्छा लगता है? और जीभ से चाटने पर मीठा लगता है? एक भी इन्द्रिय को अच्छा नहीं लगता। इस नाक को तो वास्तव में अच्छा लगता है न? अरे, बहुत खुश्बू आती है न? इत्र लगाया हुआ होता है न? यदि इस तरह पृथक्करण करेंगे, तब पता चलेगा। पूरा नर्क ही वहाँ पर पड़ा हुआ है, लेकिन इस तरह पृथक्करण नहीं करने की वजह से लोग उलझ गए हैं। वहीं पर मोह होता है, वह भी आश्चर्य ही है न!

विषय, वही अजागृति

प्रश्नकर्ता : इस मनुष्य जाति में ब्रह्मचर्य रह ही नहीं सकता, इसका क्या कारण है? मोह है? राग है?

दादाश्री : बुद्धिपूर्वक का सुख नहीं है यह। बिना सोचे-समझे माना गया सुख है। लोगों ने जो माना, वही हमने मान लिया। वह सिर्फ मान्यता का ही सुख है और जलेबी सुखदायी है, वह बुद्धिपूर्वक का सुख है।

विषय का खेल तो बुद्धिपूर्वक नहीं है, यह तो सिर्फ मन की ऐंठन ही है। कोई भी बुद्धिमान इंसान यदि बुद्धि से विषय के बारे में समझने जाए तो बुद्धि विषय को लेट गो नहीं करेगी। ये बुद्धिमान लोग लेट गो करते हैं, इसका क्या कारण है? लोकसंज्ञा के अनुसार चलते हैं, इसलिए उस तरफ का आवरण नहीं टूटा।

एक जन ने कहा कि बुद्धिपूर्वक में क्या हर्ज है? तब मैंने कहा, बुद्धिपूर्वक की चीज़ें उजाले में करनी होती है। सीक्रिसि (गुप्त) नहीं होती। हज़ार लोगों की मौजूदगी में बैठकर जलेबी खा सकते हैं? जलेबी में हर्ज नहीं है न? उसे शर्म नहीं आती?

प्रश्नकर्ता : नहीं। शर्म नहीं आती, रौब से खाई जा सकती है!

दादाश्री : यानी विषय के बारे में यदि कोई सोचे न, यदि सोचना आए, तो वह विषय की ओर कभी जाएगा ही नहीं। लेकिन सोचना भी नहीं आता न? विषय, वह अजागृति है। विषय पुसाए ही कैसे? जो चीज़ें सोचने पर अच्छी नहीं लगें, उसी चीज़ का संबंध कैसे पुसाए?

विकृत वर्णन से बहकी विषय में वृत्तियाँ

ये विषय तो बुद्धि से दूर हो पाएँ, ऐसा है। (ज्ञान होने से पहले) मैंने विषयों को बुद्धि से ही दूर किया था। ज्ञान नहीं हो, फिर भी बुद्धि से विषय जा सकते हैं। यह तो कम बुद्धि वाले हैं, इसलिए विषय रहा हुआ हैं।

प्रश्नकर्ता : क्या ये बुद्धिशाली भी विषयों का 'वेरीफिकेशन' (जाँच पड़ताल) नहीं करते?

दादाश्री : नहीं, बुद्धिशालियों ने विषय का 'वेरीफिकेशन' किया ही नहीं है। बल्कि बुद्धिशाली ही विषय में गहरे उतरे हैं। अरे! यह मरीन ड्राइव और सब जगह जाकर तू उनके विषय देखे तो ऐसा ही समझेगा कि ये मनुष्य हैं या पशु हैं? टब के अंदर नहाते हैं और वह भी इत्र लगाकर। जहाँ दुर्गंध होती है, वहाँ पर क्या करना पड़ता है?

प्रश्नकर्ता : हाँ, इत्र लगाना पड़ता है। लेकिन पिछले कितने ही समय से किसी ने ऐसा रास्ता ही नहीं बताया कि इन विषय से बाहर भी कहीं सुख है।

दादाश्री : महावीर भगवान ने यह रास्ता बताया, लेकिन किसी ने माना नहीं न! इन बुद्धिशाली लोगों ने ही लिखा है कि विषय सुख, विश्व के सभी सुखों से सर्वश्रेष्ठ है। फिर बुद्धिशालियों ने तो यहाँ तक लिखा कि कदली समान उसके पैर हैं, जंघाएँ ऐसी हैं, फलाँ ऐसा है, इस प्रकार स्त्री का सारा वर्णन किया है। इससे फिर लोग पगला गए। लेकिन क्या किसी ने ऐसा लिखा है कि स्त्री जब संडास जाती है, तब कैसी दिखाई देती है? जो संडास जाता हो, उसके साथ विषय किया ही कैसे जाए? उसे छूआ ही कैसे जाए? यह आम यदि संडास जा रहे होते, तो आम को खा ही नहीं सकते थे न? लेकिन आम तो साफ होते हैं, इसीलिए खा सकते हैं न!

इसलिए कृपालुदेव ऐसा लिखते हैं, 'लकड़ी की पुतली तो अच्छी है।' उसमें से संडास नहीं निकलती। निरी गंध है यह तो! उसका मुँह देखो तो वह भी बदबू मारता है। भ्रांति चढ़ जाती है न इसलिए नशा चढ़ जाता है। तब भान नहीं रहता। इसलिए फिर घिन नहीं आती।

विषय की भूख से पाशवता का आचरण

मनुष्य जब विषय करे, उस घड़ी उसका फोटो खींचें तो कैसा दिखेगा?

प्रश्नकर्ता : गधे जैसा।

दादाश्री : ऐसा? क्या बात कर रहा है? ऐसा इन मनुष्यों को शोभा देता है क्या? जबकि आज तो पाँच हज़ार देकर विषय करते हैं न! कोई भान ही नहीं है इन लोगों को। तुम्हें ऐसा लगा है न? हम यह सब उल्टा नहीं बोल रहे हैं न?

प्रश्नकर्ता : एक्ज़ेक्ट है दादा, हंड्रेड परसेन्ट करेक्ट है।

दादाश्री : तब लोगों में क्यों ऐसी गड़बड़ चल रही होगी? कोई भान ही नहीं है कि कहाँ जा रहे हैं?

कुत्तों को भी यदि खाना-पीना दिया हो न, तो वे भी बाहर नहीं जाते। ये बेचारे तो भूख के कारण बाहर घूमते रहते हैं। ये मनुष्य सारा दिन खाकर घूमते रहते हैं। मनुष्यों का भूख का दुःख मिटा है तो उन्हें विषयों की भूख लगी है। मनुष्य में से पशु बनने को हो, तभी तक विषय है। विषय तो जानवरों की 'कोड लैग्वेज' (सांकेतिक भाषा) है, पाशवता है, 'फुल्ली' (पूर्ण) पाशवता है। अतः वह तो होनी ही नहीं चाहिए।

इस दुनिया में अगर किसी चीज़ की निंदा करने जैसी हो तो वह है अब्रह्मचर्य। अन्य सभी चीज़ें इतनी निंदा करने जैसी नहीं हैं।

लोकसंज्ञा से माना गया है विषय में सुख

इसे तो सुख कह ही नहीं सकते। यदि कोई शराबी आदमी ऐसा कहे कि मैं पूरे हिन्दुस्तान का राजा हूँ, तो हम नहीं समझ जाएँगे कि यह तो शराब के नशे में बोल रहा है? उसी प्रकार इस भ्रांति की वजह से उसे इसमें सुख महसूस होता है। विषय में कहीं सुख होता होगा? सुख तो भीतर है, लेकिन यह तो बाहर दूसरों में आरोप करते हैं इसलिए वहाँ पर सुख महसूस होता है। भ्रांतिरस से यह सब खड़ा हो गया है। भ्रांतिरस यानी क्या कि कुत्ता जिस तरह हड्डी चूसता है, वह आपने देखा है? हड्डी पर जो थोड़ा-बहुत मांस लगा हुआ हो वह तो मानो मिल गया, लेकिन अब उसके बाद भी क्यों चूस रहा है? हड्डी तो लोहे की तरह मज़बूत होती है फिर खूब दबाए न तब क्या होता है, कि उसके मसूड़े दबते हैं और फिर उनमें से खून निकलता है। कुत्ता समझता है वह खून हड्डी में से निकल रहा है, इसलिए वापस खूब चबा-चबाकर हड्डी चूसता है। अरे! तू तेरा ही खून चूस रहा है। यह संसार भी इसी तरह चल रहा है। इसी तरह ये लोग भी हड्डियाँ ही चूस रहे हैं और खुद का ही खून चख रहे हैं।

बताओ, अब कितनी मुसीबत है! उसी तरह पूरा जगत् विषय में से सुख खोज रहा है। कड़ी धूप में अत्यंत थका हुआ आदमी, जब बबूल की छाँव में बैठे न, तो कहेगा मुझे बहुत ही आनंद आया था। विषय सुख भी वैसा ही आनंद है। आनंद तो निरुपाधि (बाह्य दुःखरहित) पद का होना चाहिए। ये सारे आनंद तुलनात्मक हैं। मनुष्य थका हुआ हो, कड़ी धूप से त्रस्त हो, उसके बाद यदि उसे कहें कि, 'बबूल की छाँव में ठीक लगेगा?' तब कहेगा, 'बहुत अच्छा लगेगा।' अब इस आनंद को आनंद कहेंगे ही कैसे?

लोगों ने विषय में सुख माना है। उसी प्रकार खुद ने भी इसमें सुख मान लिया है। इसमें बिल्कुल भी सुख मानने जैसा नहीं है। ज्ञानी की संज्ञा से देखे तो इसमें निरा दुःख है। विषय में इतना भारी जोखिम है। जितना दोष दुनिया में किसी और चीज़ में नहीं होगा, उतना दोष अब्रह्मचर्य में है। जिसे आंतरिक सुख है, वह अब्रह्मचर्य करेगा ही नहीं। यह तो आंतरिक दुःख के कारण अब्रह्मचर्य करते हैं।

पुद्गल की शक्ति में खुद फँस गया

शरीर पर राग होना ही क्यों चाहिए? शरीर किसका बना हुआ है?

प्रश्नकर्ता : *पुद्गल* का।

दादाश्री : *पुद्गल* के जो गुण हैं न, जो स्थूल गुण हैं जो ऐसे हैं कि आँखों से दिखाई दें, कान से सुनाई दें, यों स्पर्श से अनुभव में आएँ, नाक को सुगंध दें, जीभ को स्वाद दें। *पुद्गल* के गुण और प्राकृतिक गुण दोनों एकत्रित हुए हैं। प्राकृतिक गुण मिश्र चेतन के हैं और *पुद्गल* के जो गुण हैं, उन सब के एक होने से यह खून-पीप और यह सब खड़ा हो गया और संसार खड़ा हो गया है। इसी से यह पूरा जगत् उलझन में हैं। खुद की अज्ञानता की वजह से उसे इस सारी अशुचि का भान नहीं रहता और भान नहीं रहता इसलिए यह संसार खड़ा रहा है।

पुद्गल की, खुद की ऐसी अलग-अलग शक्तियाँ हैं कि जो आत्मा को आकर्षित करती हैं। उन शक्तियों से ही खुद ने मार खाई है न! आत्मा, *पुद्गल* की शक्ति जानने निकला कि यह क्या है? यह कौन सी शक्ति है? अब उसमें वह खुद ही फँस गया, अब कैसे छूटे? यदि खुद के स्वरूप का भान होगा तो छूटेगा!

पुद्गल सुख है रीपेमेन्ट वाला

आपको कभी दाद हुआ है? उसे जितना

खुजलाओ, उतना ज़्यादा मज़ा आता है न? अब वह सुख आप किस से लेते हैं? *पुद्गल* से। दोनों को 'रबिंग' करके घिस-घिस कर, 'इचिंग' करके, सुख ढूँढते हो। और जैसे ही हाथ रुका कि तुरंत जलन शुरू हो जाती है। देखो, *पुद्गल* उसे तुरंत ही दुःख देता है न? *पुद्गल* क्या कहता है कि मुझ में से क्या सुख ढूँढ रहे हो? आपके पास तो सुख है न? यहाँ हम से सुख लोगे तो आपको 'रीपे' करना पड़ेगा।

प्रश्नकर्ता : रीपे करते समय जो दुःख होता है, वह तो इस पर आधारित है न कि आपकी कितनी आसक्ति या लोभ है।

दादाश्री : वह तो जितनी ज़्यादा आसक्ति उतना अधिक दुःख। कम आसक्ति रही तो कम दुःख होता है। वह सब तो आसक्ति पर आधारित है न?

दाद का अनुभव नहीं हुआ है आपको? मतलब ये सभी 'रीपे' करने की चीज़ें हैं। इस दाद में बड़ा मज़ा आता है न? जब वह खुजलाता है, उस समय उसके चेहरे पर कितना आनंद होता है न? तब देखने वाले को ऐसा लगता है कि, 'हे भगवान, मुझे भी दाद देना।' लोग ऐसा करते हैं या नहीं?

प्रश्नकर्ता : ऐसे खुजलाने में आनंद कहाँ से होगा?

दादाश्री : नहीं, नहीं। खुजलाते समय उसके मुँह पर बहुत आनंद होता है। इससे सामने वाले व्यक्ति के मन में ऐसा होता है कि ये लोग तो आनंद भोग रहे हैं और हम रह गए। वे भगवान से माँगते हैं कि मुझे भी कुछ दीजिएगा।

प्रश्नकर्ता : ऐसा कोई थोड़े ही माँगता है? बल्कि ऐसा ही सोचता है कि यह तो गंदगी है।

दादाश्री : यह विषय भी वैसा ही है। खुजली जैसा ही है यह। सिर्फ घर्षण है। उस घर्षण से 'इलेक्ट्रिसिटी' उत्पन्न होती है, फिर वह (उसका) जब वापस आता है, 'बेक' मारता है, तो वह जोड़ों को तोड़ देता है। उसमें कहीं सुख होता होगा? उसमें आत्मा नहीं होता। उसमें चेतन भी नहीं होता। चेतन तो सिर्फ उसका निरीक्षक ही है। यानी यह तो विपरीत दशा को खुद सुख मान लेता है।

विषय रोग से अनंत जन्मों की मृत्यु

दो प्रकार के विषय हैं, एक चार्ज और दूसरा डिस्चार्ज। चार्ज बीज को धो देना चाहिए। वास्तव में तो विचार आना ही नहीं चाहिए। यदि आपको विचार आएँ तो आप उन्हें उखाड़ देना, तो फिर विचार नहीं उगेंगे। यह तो अक्रम ज्ञान है, उससे अज्ञान चला गया, लेकिन पिछला माल है, इसलिए चेतावनी देनी पड़ती है। इन बीजों का स्वभाव कैसा है कि गिरते ही रहते हैं। आखें तो तरह तरह का देखती हैं, उससे अंदर बीज गिरते हैं तो फिर उन्हें उखाड़ देना चाहिए। जब तक बीज के रूप में है, तब तक उपाय है, बाद में कुछ नहीं हो सकता। होटल को देखने से खाने की इच्छा होती है न? उसके जैसा है। हमें तो मोक्ष में जाना है इसलिए सावधान रहना है। आखों से देखने पर अगर ज़रा सा भी आकर्षण होता है तो वह भयंकर रोग है, ऐसा समझना।

विषय तो एक प्रकार का रोग है।

प्रश्नकर्ता : बड़ा रोग, बहुत बड़ा, कैन्सर जैसा।

दादाश्री : बहुत बड़ा। कैन्सर तो अच्छा है बल्कि! वह तो एक ही जन्म के लिए मारता है। यह तो अनंत जन्म बिगाड़ देता है। यह तो, अनंत जन्मों से यही मार पड़ रही है न! आपको नहीं लगता कि यह रोग है? मन में तो सभी समझते हैं, लेकिन क्या करें?

इस संसारचक्र का आधार विषय पर है। हैं तो पाँच ही विषय, लेकिन स्त्री (अब्रह्मचर्य) से संबंधित विषय तो बहुत ही भारी है। उसके तो बाद में भारी स्पंदन उड़ते हैं। अपना ज्ञान इतना अच्छा है कि उसमें रहे, तो उसे कुछ भी स्पर्श नहीं करेगा और पिछला सब धुल जाएगा लेकिन विषय के बारे में जागृत रहना पड़ेगा। वहाँ तो 'इसमें सुख है ही नहीं और यह फँसाव ही है।' ऐसा भान रहेगा तो छूटा जा सकेगा।

जितनी लेगा मिठास, उतनी आएगी कड़वाहट

प्रश्नकर्ता : तो हमारे जो अवलंबन हैं, व्यवहार के, चीज़ों के और मन के भाव उन सभी को छोड़ना है?

दादाश्री : वे तो अपने आप ही छूट जाएँगे।

प्रश्नकर्ता : फिर भी हमारे भाव में से नहीं छूटता है। ऐसा लगता रहता है कि यह अच्छा है, यह बुरा है। फिर उसमें सुख उत्पन्न होता है। ऐसा लगता है कि अवलंबन का मूल कारण यही है। मतलब हमारे ये अवलंबन जाते नहीं हैं।

दादाश्री : ऐसा है न, इन अवलंबनों का जितना सुख आपने लिया है, वह सब उधार पर लिया हुआ सुख है, आपको जो चीज़ें मिलती हैं, उन चीज़ों में से सुख नहीं मिलता। आप उनमें से जो सुख लेते हो, वह 'लोन' लेने के बराबर है। वह 'लोन' आपको 'रीपे' करना पड़ेगा।

प्रश्नकर्ता : हमने रुपये लिए होंगे तो वापस रुपये ही देने पड़ेंगे न? तो फिर हमने उससे मिठास ली तो हम मिठास ही वापस क्यों नहीं लौटाते? ऐसा संबंध क्यों नहीं आता? कड़वाहट ही क्यों आती है?

दादाश्री : ऐसा कहीं होता होगा? जो 'लोन' लिया, उसे वापस करना है। रुपये लिए तो वे रुपये वापस करने हैं। अब मिठास, उसे देना नहीं कहते। ऐसा है न, जब सोना लिया उस समय अच्छा लगता है, लेकिन सोना 'रीपे' करने जाओ तो कड़वाहट ही लगती है। लिया हुआ कुछ भी वापस करते हो, तब उस समय कड़वाहट बरतती है, ऐसा नियम है और वापस किए बिना चारा भी नहीं है न!

आत्मा का सुख नहीं भोगते और *पुद्गल* से सुख माँगा आपने! आत्मा का सुख होता, तो हर्ज ही नहीं था, लेकिन *पुद्गल* से भीख माँगी है तो वह लौटानी पड़ेगी। वह 'लोन' है। जितनी मिठास आती है, उतनी ही उसमें से कड़वाहट भुगतनी पड़ेगी। क्योंकि *पुद्गल* से 'लोन' लिया है। उसे 'रीपे' करते समय उतनी ही कड़वाहट आएगी। *पुद्गल* से लिया है इसलिए *पुद्गल* को ही 'रीपे' करना पड़ेगा।

प्रश्नकर्ता : इसमें सुख लिया उसके परिणाम स्वरूप ही ये झगड़े और क्लेश है?

दादाश्री : हाँ, इसी में से खड़ा हुआ है यह सब। और सुख कुछ भी नहीं है। ऊपर से सुबह-सुबह अरंडी का तेल पीया हो, ऐसा चेहरा हो जाता हैं, मानो अरंडी का तेल पीया हो! उसे तो, सोचते ही घिन आती है!

प्रश्नकर्ता : वर्ना फिर भी यदि लोगों के दु:खों के परिणाम इतने अधिक विचित्र हैं तो वे कब छूट पाएँगे? इतने सारे दु:ख सहन करते हैं ये लोग, इतने से सुख के लिए!

दादाश्री : वही, इसी का लालच और कितने दु:ख भुगतने पड़ते हैं।

मूल में विषय की लालच ही फँसाती है

कुत्ते को एक पूड़ी दिखाए न, तो इतने से तो वह अपनी पूरी 'फैमिली' को भी भूल जाता है। बच्चे, पिल्ले वगैरह सभी को भूल जाता है और

अपना स्थान, जिस मोहल्ले में रहता हो वह भी भूल जाता है और कहीं का कहीं जाकर खड़ा रहता है! लालच के मारे दुम हिलाता रहता है, एक पूड़ी के लिए! लालच, जिसका मैं 'स्ट्रोंग' विरोधी हूँ। लोगों में जब मैं लालच देखता हूँ तब मुझे लगता है, 'ऐसा लालच?' कुत्ते को एक पूड़ी दिखा दी, तो वह कहीं का कहीं चला जाता है, उसमें लालच आ गया न! 'ओपन पॉइज़न' (खुला ज़हर) है! जो मिले वह खाना, लेकिन लालच नहीं होना चाहिए।

लालची तो, जानवर ही कहो न उसे! मनुष्य के रूप में जानवर ही घूमते रहते हैं। थोड़ा-बहुत लालच तो हर किसी को होता है, लेकिन उस लालच को निबाह सकते हैं। लेकिन जिसे लालची ही कहा जाता है, उसे तो जानवर ही समझ लो न, मनुष्य के रूप में!

यानी लालचों से यह जगत् बंधा हुआ है। अरे! कुत्तों और गधों को लालच होता है, लेकिन हमें क्यों लालच होना चाहिए? क्या कभी लालच होना चाहिए? चूहा पिंजरे में कब आता है? पिंजरे में कब पकड़ा जाता है?

प्रश्नकर्ता : लालच होता है, तब।

दादाश्री : हाँ, पराठे की सुगंध आई और पराठा खाने गया कि तुरंत अंदर फँस जाता है। पिंजरे में पराठा देखा कि बाहर रहे-रहे वह अधीर होता रहता है कि, 'कब घुसूं, कब घुसूं?' फिर अंदर घुसे तो चूहेदानी 'ऑटोमेटिक' बंद हो जाती है। इन्सानों को ऐसा सब 'ऑटोमेटिक' आता है सब। ऐसे अपने आप ही बंद हो जाता है। अत: सर्व दु:खों की जड़ लालच है।

अंगारों को क्यों नहीं छूते? वहाँ क्यों सतर्क रहते हो? क्योंकि उसका फल तुरंत ही मिल जाता है और विषय में तो लालच होता है, इसलिए लालच से फँसता है। अंगारो को छूना अच्छा है, उसका उपाय है। उस पर कुछ भी लगाने से ठंडक हो जाती है, लेकिन विषय तो आज लालच में फँसाकर अगले जन्म के कर्म बाँध लेता है। यह तो अपने ज्ञान को भी धक्का मारने वाला है, इतना बड़ा विज्ञान है, उसे भी धक्का मार दे, ऐसा है! इसलिए सावधान रहना!

वास्तविक सुख समाया है ब्रह्मचर्य में

हमारा 'ज्ञान' क्या कहता है? जगत् में भोगने जैसा है ही क्या? तू बेकार ही इसके लिए प्रयत्न कर रहा है। भोगने योग्य तो आत्मा है!

प्रश्नकर्ता : उसे इन लालचों में से छूटना हो तो कैसे छूट सकता है?

दादाश्री : वह यदि इसका निश्चय करे तो यह सब छूट सकता है। लालच से छूटना तो चाहिए ही न! खुद के हित के लिए है न! निश्चय करने के बाद, मुक्त होने के बाद उस ओर सुख ही महसूस होगा। उसमें तो ज़्यादा सुख महसूस होगा, चैन मिलेगा बल्कि। यह तो उसे भय है कि मेरा यह सुख चला जाएगा, लेकिन इसके छूटने के बाद तो ज़्यादा सुख महसूस होगा।

आवरण वाली दृष्टि से कल्पना की है सुख की

कृपालुदेव के पत्र में क्या लिखा है? ''स्त्री के संबंध में मेरे विचार।''

''अति अति स्वस्थ विचारणा से यह सिद्ध हुआ है कि शुद्ध ज्ञान के आश्रय में निराबाध सुख है तथा वहीं पर परम समाधि है। स्त्री, वह संसार का सर्वोत्तम सुख है, यह मात्र आवरणिक दृष्टि से कल्पना की गई है, लेकिन वह ऐसा है ही नहीं। स्त्री से संयोग सुख भोगने का जो चिन्ह है, उसे विवेक से दृष्टिगोचर करने पर वमन करने योग्य भूमिका के योग्य भी नहीं रहता।''

कृपालुदेव क्या कहते हैं कि वह स्थान

वमन करने योग्य भी नहीं है, इसलिए किसी अन्य अच्छी जगह पर उल्टी करना। थूकने को कहे तो भी अच्छा नहीं लगे।' अन्य जगह पर थूक सकते हैं, लेकिन यहाँ तो हमें थूकने में भी शर्म आए। फिर आगे क्या कहते हैं कि, ''जिन-जिन पदार्थों पर जुगुप्सा रही है, वे-वे पदार्थ तो उसके शरीर में हैं और वही उनकी जन्मभूमिका है।''

प्रश्नकर्ता : जुगुप्सा यानी क्या?

दादाश्री : जुगुप्सा यानी चिढ़। जिन पर चिढ़ होती है, वे सारी चीज़ें उसी में हैं न! अरे, रेशमी चादर बांध ली तो क्या सब अच्छा हो गया? कृपालुदेव ने तो बहुत कुछ लिखा है, लेकिन लोग क्या समझें बेचारे?

सिर्फ अपनी उल्टी समझ का दोष

''फिर, वह सुख क्षणिक, खेद और खुजली के दर्द जैसा ही है। उस समय का दृश्य हृदय में अंकित होकर हँसाता है कि यह कैसा भुलावा है? संक्षिप्त में यह कहना है कि उसमें कुछ भी सुख नहीं है और सुख हो तो उसका अपरिच्छेद रूप से वर्णन करके देखो।''

'यानी कि विषय का बहुत विवरण करके जांच करके देखो' कृपालुदेव ऐसा कहना चाहते हैं। उसकी सुगंधी देखनी हो तो, उस जगह को सूँघकर तो देख, तुझे कैसा लगता है? अरे खुली आँखों से दिन के उजाले में देखो, तो वह जगह सुंदर दिखेगी? हर तरह से उस पर चिढ़ होगी!

''अत: मात्र मोहदशा के कारण, ऐसी मान्यता बन गई है, ऐसा ही पता चलेगा। यहाँ मैं स्त्री के अवयवादि हिस्सों का विवेक करने नहीं बैठा हूँ, लेकिन वहाँ फिर से कभी आत्मा नहीं खिंचे, उस विवेक के हेतु से उसका सहज सूचन किया है। स्त्री में दोष नहीं है, लेकिन (व्यवहार) आत्मा में दोष है और वह दोष चले जाने पर आत्मा जो देखता है वह अद्‌भुत आनंदमय ही है, अत: उस दोष से रहित होना वही परम जिज्ञासा है।''

स्त्री का दोष नहीं है, अपनी भूल का दोष है, अपनी समझ का दोष है। स्त्री का क्या दोष? यदि स्त्री में दोष होता तो फिर ये भैंसें भी स्त्री ही हैं न? लोग वहाँ क्यों आकृष्ट नहीं होते? अपनी उल्टी समझ के कारण खिंच जाते हैं। वह उल्टी समझ निकाल दें तो सब निकल जाएगा और कभी न कभी यह उल्टी समझ निकाले बगैर चारा ही नहीं है न?

विषय का सुख नहीं समझने देता सुख का भेद

विषय हो तो समझ से छूट जाना चाहिए। विषय अच्छा कैसे लगता है? मुझे तो यही आश्चर्य होता है! विषय पसंद है, उसका मतलब यही है कि समझ ही नहीं है।

यह विषय ऐसी चीज़ है कि एक ही दिन का विषय तीन दिनों तक किसी भी प्रकार की एकाग्रता नहीं होने देता। एकाग्रता डाँवाडोल होती रहती है। यदि कोई महीनेभर विषय का सेवन नहीं करे तो उसकी एकाग्रता डाँवाडोल नहीं होगी। आपको आत्मा का सुख बरतता है, उसके आधार पर आप यहाँ आते रहते हो। आपकी दृष्टि यहीं पर होती है, फिर भी यह सुख आत्मा का है या विषय का है, आपको वह भेद मालूम नहीं पड़ता। किसी को अन्जाने में पहले जलेबी खिलाएँ और बाद में चाय पिलाएँ तो? उसी प्रकार जलेबी की वजह से चाय फीकी लगती है, ऐसा भेद इसमें मालूम नहीं पड़ता!

क्लेश, विषय में कंट्रोल न होने से

प्रश्नकर्ता : विषय व कषाय की जलन होती है न?

दादाश्री : जलन तो लाखों मन भारी हो सकती

है, उससे मतलब नहीं है। जलन तो *पुद्गल* को होती है। कलह किस वजह से होती है? अब्रह्मचर्य की वजह से। विषय पर कंट्रोल नहीं होने के कारण है यह सब कलह। वर्ना स्त्री और पुरुष के बीच कलह क्यों होती? दुनिया में, विषय पर काबू रखनेवालों में कलह नहीं होती, सोचने पर क्या आपको ऐसा लगता है?

दो मन एकाकार हो ही नहीं सकते। इसलिए दावे शुरू हो ही जाते हैं। इस विषय के अलावा अन्य सभी विषयों में सिर्फ एक मन है, एक ही पक्ष है। इसलिए वह दावा नहीं करता! जबकि मनवालों के साथ तो जोखिम है। एक ही बार जिसके साथ विषय भोग किया हो तो उसकी कोख से जन्म लेना पड़ेगा, वर्ना वह जहाँ जाए, वहाँ जाना पड़ेगा! मिश्रचेतन के साथ शादी कर ली तो फिर क्या हो सकता है? मिश्रचेतन के दावों की तो बड़ी मुसीबतें हैं! हमें बिल्कुल परवश कर देता है।

विषय की परवशता के दु:ख विशेष

विषय में सुख की तुलना में विषय की परवशता के दु:ख अधिक हैं! ऐसा जब समझ में आएगा, तब फिर विषय का मोह छूटेगा और तभी स्त्री जाति पर प्रभाव डाल सकेगा और उसके बाद वह प्रभाव निरंतर प्रताप में परिणमित होता रहेगा। वर्ना इस जगत् में बड़े-बड़े महान पुरुषों ने भी स्त्री जाति से मार खाई है। वीतराग ही बात को समझ सके थे! इसलिए उनके प्रताप से ही स्त्रियाँ दूर रहती थीं! वर्ना स्त्री जाति तो ऐसी है कि किसी भी पुरुष को देखते ही देखते लट्टू बना दे। उनमें ऐसी शक्ति हैं। उसे ही स्त्री चरित्र कहा है न! स्त्री से तो दूर ही रहना चाहिए। उसे किसी प्रकार से लपेट में मत लेना, वर्ना आप ही उसकी लपेट में आ जाओगे। और यही का यही झंझट कितने जन्मों से हुआ है न!

पिछले जन्म की माँ आज बेटी भी बन सकती है। जैसा ऋण बंधा हो वैसा ही होता है। काकी बन सकती है, मामी बन सकती है, मौसी बन सकती है, पत्नी भी बन सकती है। ऐसा सब हो सकता है! पूर्व जन्म में यदि माँ हो और इस जन्म में पत्नी बने तो वैराग्य नहीं आएगा?

रोंग बिलीफ से विषय में माना सुख

विषय का सुख तो सुख है ही नहीं। वह सिर्फ मान्यता ही है। 'रोंग बिलीफ' ही है। व्यवहार में लोगों से यह बात नहीं कह सकते, संसारव्यवहार के लिए यह काम का है ही नहीं। संसार में तो सिर्फ इसी एक सुख का अवलंबन है, वह भी उन बेचारों का हमने ले लिया!

विषय में जो सुख माना है न, वह निरी रोंग बिलीफ की भी रोंग बिलीफ है। जलेबी में सुख लगता है। अब किसी को जलेबी नहीं भाती होगी, लेकिन उसे श्रीखंड तो भाता होगा? यानी ये चीज़ें भी सुखदायी लगती हैं। अत: विषय रोंग बिलीफ की भी रोंग बिलीफ है। वह भी फिर जगत् में चल पड़ा तो चला फिर। सही समझ ही नहीं है न!

इंसान को रोंग बिलीफ है कि विषय में सुख है। अब अगर विषय से भी उच्च प्रकार का सुख मिल जाए तो विषय में सुख नहीं लगेगा! विषय में सुख नहीं है लेकिन देहधारी को व्यवहार में कोई चारा ही नहीं है। बाकी जान-बूझकर गटर का ढक्कन कौन खोलेगा? विषय में सुख होता तो चक्रवर्ती इतनी सारी रानियाँ होने के बावजूद सुख की खोज में नहीं निकलते! इस ज्ञान से ऐसा उच्च प्रकार का सुख मिलता है। फिर भी इस ज्ञान के बाद तुरंत विषय चले नहीं जाते, लेकिन धीरे धीरे चले जाते हैं। फिर भी खुद को सोचना तो चाहिए कि यह विषय कितना गंदगी वाला है!

विषय के विरोध में तो मैं कितना बोलता

रहता हूँ, फिर भी लोगों की समझ में नहीं आता तो फिर हम क्या करें? पंप लगाकर माल भरकर लाए हैं, ज़रा सा भी 'स्कोप' नहीं दिया, अवकाश ही नहीं दिया न? मानो यदि विषय नहीं होगा तो जी ही नहीं पाएगा, ऐसे मानकर आए हैं!

जब तक जिस बारे में अंध है, तब तक उस बारे में दृष्टि खिलती ही नहीं, बल्कि और ज़्यादा अंध होता जाता है। उससे दूर रहने के बाद उससे छूट सकता है। फिर उसकी दृष्टि खिलती जाएगी, उसके बाद समझ में आता जाएगा।

ज़रूरत है रोंग बिलीफ से छूटने की

प्रश्नकर्ता : (विषय में सुख है) वह जो मान्यता खड़ी होती है, ऐसा संयोग मिलने की वजह से होता है?

दादाश्री : लोगों के कहने से हमें हो जाता है। हमारे कहने से मान्यता खड़ी होती है। और क्योंकि आत्मा की हाज़िरी में मान्यता खड़ी होती है इसलिए दृढ़ हो जाती है और इसमें ऐसा है ही क्या? कुछ भी सुंदरता होती ही नहीं है, मांस के लोथड़े ही हैं।

सिर्फ 'रोंग बिलीफ' ही छोड़नी हैं। लेकिन वह आपसे, अपने आप से नहीं छूटेगी। क्योंकि आपने 'रोंग बिलीफ' खड़ी की हैं। जैसे-जैसे उन्हें छोड़ने जाओगे, वैसे-वैसे और ज़्यादा 'रोंग बिलीफ' खड़ी होती जाएँगी। वह तो जब 'ज्ञानीपुरुष' 'राइट बिलीफ' बिठा देते हैं, तब 'रोंग बिलीफ' छूट जाती हैं। अब मूल रोंग बिलीफ हमने खत्म कर दी लेकिन इस विषय में तो हम थोड़ी-बहुत रोंग श्रद्धा फ्रैक्चर कर देते हैं!

यह तो 'बिलीफ' ही 'रोंग' थी, वर्ना आत्मा रागी भी नहीं था और द्वेषी भी नहीं था। राग-द्वेष आत्मा में हैं ही नहीं। आत्मा में वे गुण हैं ही नहीं। ये सभी आरोपित भाव हैं। आरोपित भाव कैसे हैं? व्यवहार के हैं। यानी कि सिर्फ आपकी 'बिलीफ' ही रोंग है कि 'मुझे राग हो रहा है, और मुझे द्वेष हो रहा है।' जो उस 'रोंग बिलीफ' को उखाड़ दे, वह 'ज्ञानी'। वह 'बिलीफ' यों ही उखड़ सके ऐसी नहीं है। आपकी वह 'रोंग बिलीफ' हमने उखाड़ दी है।

प्रश्नकर्ता : इसे ज़रा विस्तार से समझाइए न कि 'बिलीफ रोंग' है और 'ज्ञानीपुरुष' बिलीफ को उखाड़ देते हैं।

दादाश्री : हम क्या कहते हैं कि आत्मा अगुरु-लघु स्वभाव का है और राग-द्वेष गुरु-लघु स्वभाव के हैं। इसलिए उन दोनों में संबंध भी नहीं था और साझेदारी भी नहीं थी। ये जो आरोपित भाव हैं कि आत्मा को राग होता है और द्वेष होता है, वे व्यवहार के भाव हैं। लोग ऐसा कहते हैं कि मुझे इसके प्रति राग है। अब वास्तव में आपको पौद्गलिक आकर्षण है! क्योंकि आपको मैंने ज्ञान दिया है इसलिए आपका आत्मा अलग हो गया है, तो अब क्या रहा? पौद्गलिक आकर्षण रहा। *पुद्गल* में आकर्षण नामक गुण है और विकर्षण नामक गुण है। अब लोग उस आकर्षण को 'राग' कहते हैं और विकर्षण को 'द्वेष' कहते हैं। आपका पैर गंदगी में पड़े और घिन आए, तो उससे ज्ञान चला नहीं गया!

गुण व अवगुण के भेद से समझ में आएगा सच्चा सुख

प्रश्नकर्ता : यानी ज्ञान के बाद सिर्फ 'बिलीफ' ही बदलनी है? 'विषय में सुख है,' ऐसी 'बिलीफ' कैसे निकलेगी?

दादाश्री : यानी विषय में से रस निर्मूल कब होगा कि जब पहले उसे खुद को ऐसा लगे कि 'यह मिर्च खा रहा हूँ, इससे मुझे तकलीफ होती

है, ऐसे नुकसान करती है,' उसे ऐसा समझ में आना चाहिए। जिसे मिर्च का शौक़ हो, उसे जब गुण-अवगुण समझ में आ जाएँ और विश्वास हो जाए कि यह मुझे नुकसान ही करेगी तो वह शौक़ जाएगा। अब यदि हमें ऐसा यथार्थ रूप से समझ में आ जाए कि 'शुद्धात्मा में ही सुख है,' तो विषय में सुख रहेगा ही नहीं।

यह चाय मज़ेदार मीठी लगती है, वह अपना रोज़ का अनुभव है, लेकिन जलेबी खाने के बाद कैसी लगेगी?

प्रश्नकर्ता : फीकी लगेगी।

दादाश्री : तब उस दिन पता चल जाता है, बिलीफ बैठ जाती है कि जलेबी खाई हो तो चाय फीकी लगती है। इसी तरह जब आत्मा का सुख रहता है, तब अन्य सब फीका लगता है।

विकसित करो विस्तार से सोचने की शक्ति

प्रश्नकर्ता : तो क्या ऐसा है कि विषय समझ से जाएगा? जैसे-जैसे समझ बढ़ती जाएगी, वैसे विषय चला जाएगा।

दादाश्री : समझ से ही चला जाएगा। यदि ऐसा समझ में आ गया न कि 'यह साँप ज़हरीला है और अगर काट लेगा तो तुरंत मर जाएँगे,' तो फिर वह ज़हरीले नाग से दूर ही रहेगा। उसी तरह इसमें भी समझ में आ जाना चाहिए।

प्रश्नकर्ता : हाँ। लेकिन वह समझ में क्यों नहीं आता?

दादाश्री : अनादिकाल से आराधन किया हुआ है न, उसी को सत्य माना है न!

प्रश्नकर्ता : वह ठीक है, लेकिन वह आराधन किया हुआ और आज का ज्ञान, उसमें अभी भी क्यों युद्ध चल रहा है?

दादाश्री : विस्तार से सोचने की खुद की शक्ति ही नहीं है न। और सारी शक्ति होती तो है, लेकिन वह उत्पन्न नहीं हुई है न!

प्रश्नकर्ता : तो वह शक्ति उत्पन्न कैसे होगी?

दादाश्री : वह तो रात-दिन उसी के विचार हों, उसी पर विचारणा करता रहे और उसमें कितना आराधन करने योग्य है और वह कितना करने योग्य है, तुरंत अंदर जैसे-जैसे हमें विचारणा हो न, वैसे-वैसे खुलता जाएगा।

प्रश्नकर्ता : यानी इसका मीनिंग यही हुआ न कि कुछ भी करके यह व्यवहार खत्म कर देना चाहिए।

दादाश्री : इसलिए वे थ्री विज़न इस्तेमाल करते हैं न? और सोचा हुआ होगा तो थ्री विज़न भी इस्तेमाल नहीं करना पड़ेगा।

नष्ट कर देना है बीज, उगने से पहले

प्रश्नकर्ता : दिन भर के जो व्यवहार हैं, वे व्यवहार आवश्यक हैं। वही उसकी प्रगति में अंतरायरूप हैं न अभी, क्योंकि उसे सोचने का टाइम ही नहीं मिलता।

दादाश्री : इसलिए इसके बजाय, सब से अच्छा यह है, कि अपनी दृष्टि कहीं पर भी चिपके, तो उखाड़ देना और प्रतिक्रमण कर लेना, बस।

प्रश्नकर्ता : उसके बाद मन कब तक इस एक ही सिद्धांत पर चलेगा? मन एक सिद्धांत पर कन्टिन्युअस नहीं चलता। बार-बार दृष्टि बिगड़ती है और प्रतिक्रमण करना या यह करना, यह सिद्धांत कन्टिन्युअस नहीं चलता। थ्री विज़न भी एट-ए-टाइम नहीं चलता। कन्टिन्युअस रहना चाहिए और जब विस्तार से उसे समाधान हो, तब वह आगे बढ़ता है।

दादाश्री : वह विस्तार से सप्लाइ भी करना पड़ता है। अपने से हो सके तब तक, पहले तो यह उखाड़ देना चाहिए, तो चला फटाफट। खुद के खेत में यदि सारी कपास बोया है, कपास को पहचानते हैं कि यह कपास है, तब फिर अगर दूसरा कुछ उगे, तो उसे निकाल देना है। उसे निराई कहते हैं। ऐसे निराई कर दें तो हो जाएगा। उगते ही सारा दबा दिया। तो हो गया। उससे पहले दबाया जा सके, ऐसा नहीं है। जब तक उगेगा नहीं तब तक बीज का पता नहीं चलेगा, उगते ही पहचान जाओगे कि यह बीज अलग है।

प्रश्नकर्ता : लेकिन उसका निश्चय होगा तो दूसरा कुछ उगते ही उसे पता चल जाएगा न?

दादाश्री : दूसरा बीज दिखे तो उसे उखाड़कर फेंक देना यानी संक्षेप में कहें तो यहीं सब से अच्छा है। निश्चय नहीं टूटे और टूटते ही सावधान नहीं हो जाएँ तो निश्चय दूसरी ओर मुड़ जाता है। आत्मा के संबंध में निश्चय है, वह निश्चय, जिस ओर जाता है, उस ओर मुड़ जाता है।

निश्चय यानी कुछ भी नहीं खोजना

प्रश्नकर्ता : लेकिन इस एक सिद्धांत पर ही तो नहीं बैठे रह सकते हैं न, आगे बढ़ना तो पड़ेगा न।

दादाश्री : उस घड़ी फिर से मिल आएगा रास्ता। उस घड़ी अपने आप सभी संयोग मिल जाएँगे। जिसका ऐसा निश्चय है कि कुएँ में गिरना ही नहीं है, वह यदि चार दिन से सोया नहीं हो और उसे कुएँ की दीवार पर बिठा दिया जाए, फिर भी नहीं सोएगा वहाँ।

प्रश्नकर्ता : वहाँ तो प्रत्यक्ष दिखता है न कि गिर जाऊँगा यहाँ।

दादाश्री : हाँ, तो ऐसे प्रत्यक्ष से भी बुरा है यह तो। यह तो कितनी बड़ी खाई है! अनंत जन्मों के लिए जंजाल लिपट जाता है। अर्थात् मन मज़बूत हुआ होगा तो हो सकता है, वर्ना यों तो नहीं हो पाएगा। यों कच्चे मन से ऐसे, ये धागे सिलाई के लिए नहीं है। कैसा स्ट्रोंग होना चाहिए कि मर जाऊँ लेकिन छूटे नहीं। तेरा निश्चय मज़बूत है न!

प्रश्नकर्ता : एकदम स्ट्रोंग। निश्चय स्ट्रोंग हो जाए तो सबकुछ आता ही जाता है।

दादाश्री : वह सीक्रिसि मिट गई तो 'ओपन टु स्काई' हो गया। उस गुप्त की वजह से यह सारी सीक्रिसि है। उसके बाद हमारी तरह बोला जा सकेगा, 'नो सीक्रिसि'।

जो निरंतर विषयसुख भोग रहे हैं, उनके चेहरे तो देखो?! अरंडी का तेल पीया हो, वैसा दिखता है? और जो नहीं भोगते उनके?

प्रश्नकर्ता : निश्चय स्ट्रोंग है और मैंने कोई सीक्रिसि नहीं रखी है। आलोचना में आपके सामने सभी बातें ओपन की हुई हैं।

दादाश्री : वह सब ठीक है, लेकिन यह ऐसा सब (विषय से संबंधित) तूफान ढूँढना ही नहीं होता। निश्चय मतलब कुछ भी ढूँढना नहीं होता। अपने आप ही आकर खड़ा रहे। अन्य किसी चीज़ की ज़रूरत ही नहीं है न!

जहाँ आकर्षण होने लगे, वहाँ चाहिए प्रतिक्रमण

प्रश्नकर्ता : मुझे ऐसा रहा करता है कि मेरा निश्चय इतना स्ट्रोंग है। ज्ञानीपुरुष के साथ का प्रत्यक्ष संयोग है, आप्तपुत्रों के साथ मैं रहता हूँ। मुझे इसमें (विषय में) बिल्कुल इन्टरेस्ट नहीं है, फिर भी आकर्षण क्यों रहा करता है?

दादाश्री : यह जो आकर्षण होता है न, वह पूर्व का हिसाब है इसलिए आकर्षण होता है। उसे तुरंत ही वो (निर्मूल) कर डालना।

प्रश्नकर्ता : प्रतिक्रमण।

दादाश्री : हाँ। वह कहीं अपने निश्चय को तोड़ता नहीं है। आँखों को कुछ ठीक लगे तो आकृष्ट होती है, इससे कोई गुनाह नहीं लगता। (खुद प्रतिक्रमण न करे तो गुनाह) वह तो प्रतिक्रमण कर लेने से अपने आप धुल जाता है। वह पिछले जन्म की गलती है और जहाँ वैसा हिसाब होगा तभी वहाँ जाएगा, वर्ना जाएगा ही नहीं कभी भी। वह मिल जाए तभी आकर्षण होता है। वह तो प्रतिक्रमण से धुल जाएगा। उसका और क्या हिसाब है? वह तो, थ्री विज़न (की समझ) रखने के बावजूद भी दिखता है या आकर्षण हो रहा है। समझ में आए ऐसी बात है या नहीं?

प्रश्नकर्ता : समझ में आ रहा है न! मुझे ऐसा था कि इतना सुंदर ज्ञान मिला है और छूटने के ऐसे सब सुंदर संयोग मिले हैं, तो यदि प्योर हो जाएँ इस एक ही चीज़ में, तो बहुत अच्छा रहेगा, ऐसा।

दादाश्री : हाँ, लेकिन प्योर ही है। निश्चय है तब तक प्योर है और ऐसे इम्प्योरिटी माना, वह भी गलती है अपनी। निश्चय अपना था, इसलिए प्योर रह सकते हैं। फिर जो आकर्षण होता है, उसके उपाय करने पड़ते हैं! फिसल गए तो क्या कोई गुनाह है? फिर से खड़े होकर चलने लगना। कपड़े बिगड़ गए हों तो धो लेना। तुम (जान-बूझकर) फिसल पड़े तो गुनाह है, फिसल गए तो गुनाह नहीं।

जहाँ खेद है, वहाँ आप अलग हो

प्रश्नकर्ता : मुझे अंदर यों ऐसा खेद रहा करता है कि ऐसा सुंदर ज्ञान मिला है, फिर भी अभी तक ऐसी स्थिति क्यों अनुभव कर रहा हूँ?

दादाश्री : नहीं, वह तो सभी को ऐसा होता है। वह तो बल्कि यदि हम प्रतिक्रमण से धो डालें तो दिन बदलेंगे। वर्ना बाकी रहा, ऐसा कहा जाएगा। पिछले जन्म में जो हस्ताक्षर किए थे, वे छोड़ेंगे नहीं न!

अब यह ज्ञान दिया है तो आप में सहन करने की शक्ति उत्पन्न हो गई है। आपको जुदापन का भाव रह सकता है। तो फिर विषय क्यों होने चाहिए? लेकिन फिर भी परिणाम कोई भी नहीं बदल सकता, क्योंकि ये *पुद्गल* परिणाम हैं और यह तो रिज़ल्ट हैं। रिज़ल्ट नहीं बदला जा सकता, लेकिन रिज़ल्ट पर खेद, खेद और खेद रहे तो आप छूट जाओगे। आपको यदि खेद है, तो आप मुक्त हो और रिज़ल्ट में एकाकार हो तो बंधन है।

चाहिए, ब्रह्मचर्य का ही एकमात्र अभिप्राय

प्रश्नकर्ता : दादा, अब सबकुछ जल्दी से खाली हो जाए, ऐसा कुछ कर दीजिए। यानी कि यह जो सारा विषय और कपट का जो माल भरा है, वह सारा माल खाली करना है।

दादाश्री : ओहोहो! विषय का! विषय का खाली करना है, ऐसा है न, जल्दी खाली होने का मतलब इस शरीर का खत्म होना। वह माल फूटे तो उसमें तुझे क्या परेशानी है? चुभेगा तभी जब तू उस तरफ सो जाएगा। इस ओर सो जाएँ, अपने अंदर सो जाएँ तो? (कल्पना में) 'स्त्री' के पलंग पर सो जाएगा, तब चुभेगा न! 'अपने' पलंग पर सोने से चुभेगा क्या? बहुत चुभता है? तो फिर शादी कर ले।

प्रश्नकर्ता : नहीं, ऐसा नहीं। ये जो गाँठें फूटती हैं, वे चुभती हैं।

दादाश्री : वह चंदूभाई को चुभे उसमें तुझे क्या है? चंदूभाई से कहना, 'ले अब ले स्वाद!' ले तेरा किया तू भुगत। हमें कुछ नहीं कर सकता। तुम्हारी तो उम्र छोटी है तो अभी परेशानी वाले स्टेशन आएँगे। निरी झाड़ी और जंगल सारा! स्त्री

विषय, वह गलत चीज़ है, ऐसा तुझे निरंतर रहा करता है?

प्रश्नकर्ता : निरंतर।

दादाश्री : यह विषय तो सब से खराब चीज़ है, ऐसा निरंतर अभिप्राय रहेगा तो आपका आज का गुनाह थोड़ा-बहुत चौदह आने जितना माफ हो जाएगा। लेकिन जिसे ऐसा अभिप्राय बरतता है, कि विषय में कोई हर्ज नहीं है तो वह बेचारा तो मारा ही गया! क्यों मारा जाएगा कि अभी भी उसे अभिप्राय है कि इसमें कोई हर्ज नहीं है।

अब्रह्मचर्य का अभिप्राय तो होना ही नहीं चाहिए। लेकिन अभी तक उसके लिए अभिप्राय है और उस अभिप्राय से 'जैसा है वैसा' आरपार नहीं देख पाते। मुक्त आनंद का अनुभव नहीं हो पाता, क्योंकि अभिप्राय का आवरण बाधा डालता है। अभिप्राय तो ब्रह्मचर्य का ही रखना चाहिए।

विषय बीज होगा निर्मूल, शुद्ध उपयोग से

विषय के विचार जिसे अच्छे नहीं लगते हों और उनसे छूटना हो वह उन्हें इस सामायिक से, शुद्ध उपयोग से, उन्हें विलय कर सकता है। इस 'ज्ञान' के बाद जिसे जल्दी हल लाना हो उसे ऐसा करना चाहिए। सभी को इसकी ज़रूरत नहीं है।

प्रश्नकर्ता : फिर भी ऐसा नहीं लगता कि इसे पहुँच पाएँगे।

दादाश्री : ऐसा कुछ भी नहीं है। एक *राजीपा* (गुरुजनों की कृपा और प्रसन्नता) और दूसरा सिन्सियारिटी, सिर्फ ये दो ही हों तो सबकुछ प्राप्त हो सकता है। बाकी इसमें कोई मेहनत करनी ही नहीं होती।

अपने यहाँ ये सब लोग जो सामायिक करते हैं, उस सामायिक में उस विषय को रखकर खुद ध्यान करे तो वह विषय विलीन होता जाता है, खत्म हो जाता है! जो-जो आपको विलीन कर देना हो, उसे यहाँ पर विलीन किया जा सकता है।

सामायिक में तो, खुद का जो दोष है, उसी को रख देना! अहंकार हो तो अहंकार रख देना। विषयरस हो तो विषयरस रख देना, लोभ-लालच हो तो उसे रख देना। इन गाँठों को सामायिक में रख दीं और उन गाँठों पर ज्ञाता-द्रष्टा रहे तो वे विलय हो जाएँगी। यह सामायिक इतनी आसान, सरल और सब से ऊँची चीज़ है! अन्य किसी तरीके से ये गाँठें खत्म हो पाएँ, ऐसी नहीं है। यहाँ एक बार सामायिक करके जाए, तो फिर घर पर भी हो सकेगी! यहाँ सब के साथ बैठकर करने से क्या होता है कि सभी का प्रभाव पड़ता है और बिल्कुल पद्धतिपूर्वक अच्छा हो जाता है। इसके बाद आप घर पर करोगे तो चलता रहेगा।

प्रश्नकर्ता : ये सुबह में सामायिक करते हैं, तो उसमें पचास मिनट बाद तो सुख छलकने लगता है।

दादाश्री : आएगा ही न! क्योंकि आप आत्मस्वरूप होकर सामायिक करते हो तो आनंद आएगा ही न! आत्मा अचल है।

अब कई यह सामायिक दिन में दो-दो, तीन-तीन बार करते हैं। क्योंकि स्वाद चख लिया है न! यह वीतरागी ज्ञान मिलने के बाद उसका स्वाद भी कुछ और ही होता है, फिर कौन छोड़ेगा? बाहर के लोगों की सामायिक में तो सब हाँकना पड़ता है और इसमें तो किसी को हाँकना करना नहीं होता। सिर्फ देखते ही रहना है, ज्ञाता-दृष्टा। उसमें भी वापस दो फायदे होते हैं! एक तो खुद को सामायिक का फल मिलता है, मतलब क्या? कि जब यह सब अचल हो जाता है तब आत्मा के स्वभाव का पता चलता है, इसलिए सुख उत्पन्न

होता है। यह जो चंचल भाग है, वह अचल हो जाता है, इसलिए आत्मा का स्वभाविक सुख उत्पन्न होता है। इस चंचलता की वजह से वह सुख प्लस-माइनस हो जाता है। दूसरा यह कि खुद के जो दोष हैं, उन्हें ज्ञाता-दृष्टा के तौर पर देखते रहने से दोष विलीन होते जाते हैं। इस तरह दो लाभ होते हैं।

सामायिक से विलय होगा विषयरस

विषय की गाँठ बड़ी होती है उसके *निकाल* की बहुत ही ज़रूरत है, वह कुदरती रूप से अपने यहाँ सामायिक में शुरू हो गया है! सामायिक करो, सामायिक से काफी कुछ विलय हो जाता है। कुछ करना तो पड़ेगा न? जब तक दादा हैं, तब तक सारा रोग निकालना पड़ेगा न? एकाध गाँठ ही भारी होती है, लेकिन जो भी रोग है तो उसे निकालना तो पड़ेगा न? उसी रोग की वजह से अनंत जन्मों से भटके हैं न? यह सामायिक तो किस हेतु से है कि अभी तक विषयभाव का बीज खत्म नहीं हुआ है और उसी बीज में से चार्ज होता है और उस विषयभाव के बीज को खत्म करने के लिए यह सामायिक है।

आपको विषय नहीं चाहिए, लेकिन विषय छोड़ते नहीं हैं न? हमें गड्ढे में नहीं गिरना हो फिर भी गिर जाएँ तो क्या करना चाहिए? तुरंत ही एक घंटे तक दादा से माँग करना कि, 'दादा, मुझे ब्रह्मचर्य की शक्ति दीजिए।' ताकि शक्ति मिल जाए और प्रतिक्रमण भी हो जाएँ। फिर दिमाग़ में उसकी 'वरीज़' (चिंता) मत रखना। गड्ढे में गिरे तो तुरंत ही सामायिक करके धो देना। सामायिक यानी हाथ-पैर धोकर, कपड़े धोकर, सूखाकर और समेटकर साफ-सुथरे हो जाना। तुरंत सामायिक नहीं हो सके तो दो-चार घंटों बाद भी कर लेना, लेकिन *लक्ष* (जागृति) में रखना है कि सामायिक करनी बाकी है।

अवस्था सिखाती है वैराग्य पाठ

वीतराग इतना ही देखते थे कि मनुष्य की प्राकृतिक शक्ति का उत्पन्न होना, व्यय होना और वर्तमान शक्ति, उन सभी शक्तियों को त्रिकाल ज्ञान से देखते थे। उत्पन्न, व्यय आदि को संपूर्ण रूप से जानते थे इसलिए फिर उन्हें राग उत्पन्न नहीं होता था। यह राग का उत्पन्न होना, वह तो सिर्फ वर्तमानकाल के ज्ञान से होता है। एक तो खुद के स्वरूप का अज्ञान और वर्तमानकाल का ज्ञान, तब फिर उसे राग उत्पन्न होता है। लेकिन यदि उसे यह समझ में आए कि यह गर्भ में थी तब ऐसी दिखती थी, जन्म हुआ तब ऐसी दिखती थी, छोटी बच्ची थी तब ऐसी दिखती थी, फिर ऐसी दिखती थी, आज ऐसी दिखती है, फिर ऐसी दिखेगी, बूढ़ी होने पर ऐसी दिखेगी, पक्षाघात होगा तब ऐसी दिखेगी, अर्थी उठेगी तब ऐसी दिखेगी, ऐसी सभी अवस्थाएँ जिनके *लक्ष* (जागृति) में है, उन्हें वैराग्य सिखाना नहीं पड़ता! यह तो, आज जो दिखता है, उसे देखकर ही जो मूर्च्छित हो जाते हैं, उन्हें वैराग्य सीखना है। वीतराग तो बहुत समझदार थे। भले ही कोई भी चीज़ आए लेकिन उन्हें मूर्च्छा उत्पन्न नहीं करवा सकती थी क्योंकि उस चीज़ को वीतराग तीनों काल से देख सकते थे।

यह जो चीज़ है, इसकी क्या-क्या अवस्थाएँ उत्पन्न होती हैं? मिट्टी में से उत्पन्न हुआ, उसमें से घड़ा बनाया, अब ऐसी अवस्था हुई, ऐसी अवस्था हुई। फिर अब वह विनाश के पथ पर जाएगा, ऐसी सारी अवस्थाएँ बता सकते हैं, आखिर में फिर से मिट्टी बन जाएगी।

प्रश्नकर्ता : उन सभी अवस्थाओं का ज्ञान एक ही बार में रहता है?

दादाश्री : एक ही बार में! मैंने वह जो कहा न कि मनुष्य को मोह क्यों उत्पन्न होता है? तब

कहे, दोनों जवान हैं इसलिए और उस समय वहाँ पर होश नहीं रहता, कि यह मोह टिकाऊ है या टेम्परेरी है? फिर इस समय जो है, वैसा ही उनकी कल्पना हमेशा के लिए ढूँढती है। अब फिर बुढ़ापे में क्या होता है? कल्पना कैसी हो जाती है?

प्रश्नकर्ता : उस समय उसे बोरियत होती है।

विषय में सुखबुद्धि, वह है *पुद्गल* परिणाम

दादाश्री : अत: वह *पुद्गल* है। *पूरण-गलन वाली* चीज़ है। यानी वह चीज़ हमेशा के लिए नहीं है, टेम्परेरी एडजस्टमेन्ट है। सुखबुद्धि अर्थात् यह आम अच्छा हो और उसे फिर से माँगें, तो उससे ऐसा नहीं माना जा सकता कि उसमें सुखबुद्धि है।

प्रश्नकर्ता : जब तक पाँच इन्द्रियों के विषयों में सुखबुद्धि है, तब तक *निकाल* नहीं होगा न?

दादाश्री : सुखबुद्धि रहे, उसमें कोई हर्ज नहीं है। सुखबुद्धि आत्मा की चीज़ नहीं है, वह *पुद्गल* की चीज़ है। तुम्हें कोई भी चीज़ दी जाए, तब उसमें आपको सुखबुद्धि उत्पन्न होती है। फिर से वही चीज़ और अधिक दी जाए, तब उसमें दु:खबुद्धि भी उत्पन्न हो सकती है। ऐसा आपको पता चलता है या नहीं? मैंने आप सब को जो आत्मा दिया है, उसमें ज़रा सी भी सुखबुद्धि नहीं है। यह सुख उसने कभी चखा ही नहीं है। वह तो शरीर का आकर्षण है। वह जो सुखबुद्धि है, वह तो अहंकार को है।

प्रश्नकर्ता : शरीर का और जीभ का आकर्षण बहुत रहा करता है।

दादाश्री : वह जो आकर्षण रहा करता है, उसमें सिर्फ जागृति रखनी है। हमने आपको जो वाक्य दिया है न कि 'मन-वचन-काया की तमाम संगी क्रियाओं से मैं बिल्कुल असंग ही हूँ।' वह जागृति रहनी चाहिए, और वास्तव में एक्ज़ेक्टली ऐसा ही है। वह सब *पूरण-गलन* है। आप अगर यह जागृति रखोगे तो आपको कर्मबंधन नहीं होगा।

पर्याय के ज्ञान से जाएगी मोहदृष्टि

इस जगत् में तो सभी चीज़ें ऐसी ही हैं न कि जो भ्रमित करें? जहाँ मन ही कच्चा है, वहाँ क्या हो सकता है? इसमें देखने जैसा है ही क्या? यह तो देखने की बुरी आदत है। जो दिखाई देता है, उसके प्रति मोह होता है। इन्सान को तो इन सभी पर्यायों का ज्ञान है नहीं! यदि खाने के बाद उल्टी हो जाए तो जो उल्टी हुई, वह खाया था उसी का हिस्सा है, ऐसा एट-ए-टाइम *लक्ष* में नहीं रहता न? जैसे कि ये आम होते हैं, उनमें बौर आते हैं, फिर फल लगते हैं, छोटे-छोटे आम आते हैं। वे कसैले लगते हैं, फिर खट्टे होते जाते हैं, उसके बाद मीठे होते हैं। वे ही फिर सड़ जाते है, बिगड़ जाते है, बदबू मारते हैं। ये सारे पर्याय एट-ए-टाइम हाज़िर रहें, तो फिर आम के प्रति मोह ही नहीं होगा न!

अवस्था दृष्टि से देखने पर ही उसका ऐसा सब असर होता है। अवस्था दृष्टि से ही आकर्षण-विकर्षण है, तत्वदृष्टि से नहीं है। अवस्था में तन्मयाकार हो जाए कि तुरंत ही अंदर लोहचुंबकत्व उत्पन्न हो जाता है और उससे फिर आकर्षण शुरू होता है।

छूट सकते हैं शूट ऑन साइट प्रतिक्रमण से !

'ज्ञानीपुरुष' के वाक्य विषय का विरेचन करवाने वाले होते हैं। जब मन-वचन-काया से संपूर्ण रूप से निर्विषयी हो, तब उनके शब्दों से विषय का विरेचन होता है। अंदर विचार आया और वह अवस्था खड़ी हुई, कि तुरंत ही उसकी आहुति दे दी जाती है। सिर्फ यह विषय ही ऐसा है कि निरे कपट का ही संग्रहस्थान है! जिसमें अनंत दोष लगते हैं और कितने ही जन्म बिगाड़ देता है! यदि विषय हो तो वे एकदम से चले नहीं जाएँगे। लेकिन

उससे तंग आ जाए और उसका प्रतिक्रमण करता रहे तो हल आ जाएगा। प्रतिक्रमण किसे कहते हैं कि दाग़ लगा कि तुरंत धो देना। उसे प्रतिक्रमण कहते हैं। इस दाग़ को क्यों धोते हो? क्योंकि वह क्रमण नहीं है, यह अतिक्रमण है। इसलिए उसका प्रतिक्रमण करो और वह 'शूट ऑन साइट' होना चाहिए। अक्रम विज्ञान का प्रतिक्रमण 'शूट ऑन साइट' है। वर्ना ये लफड़े छूटेंगे ही नहीं न! एकावतारी होना है, लेकिन ये लफड़े कब छूटेंगे? 'शूट ऑन साइट' प्रतिक्रमण से छूटा जा सकता है।

विषय का प्रतिक्रमण रविवार को पूरा दिन करता रहे, तो बाद में छः दिन तक विषय की बात खड़ी हो, उससे पहले ही प्रतिक्रमण उसे घेर लेंगे। अंदर विषय तो खड़े होंगे, लेकिन प्रतिक्रमण का ऐसा ज़ोर रखना कि प्रतिक्रमण के सभी पुलिस (सिपाही) उसे घेर लें।

प्रतिक्रमण से धो सकते हैं विषयरूचि

प्रश्नकर्ता : जैसे-जैसे हम प्रतिक्रमण करेंगे, वैसे-वैसे विषय कम होगा न?

दादाश्री : हाँ, प्रतिक्रमण करने से कम होता जाएगा। प्रतिक्रमण करता तो है, लेकिन अंदर विषय की रुचि रहा करती है। उसका खुद को पता नहीं चलता। वह रुचि बिल्कुल भी नहीं रहनी चाहिए। अरुचि उत्पन्न होनी चाहिए। अरुचि मतलब तिरस्कार नहीं, लेकिन इसमें कुछ है ही नहीं ऐसा होना चाहिए।

प्रश्नकर्ता : यह आप जब से, दो दिन से बोले हो न, तो यों ऐसे पराक्रम जैसा खड़ा हो गया है कि यों जितनी पोलम्पोल चल रही थी, वह सब बंद हो गई है।

दादाश्री : हाँ, बंद हो जाती है। यह तो दादा के ये शब्द, सारी पोलम्पोल बंद हो जाती है। आप इन शब्दों का ध्यान रखो तो बहुत अच्छा है। अंदर सतर्क और इसमें भी सतर्क, लेकिन उतना ही यदि इसमें (निश्चय में)सतर्क रहे तो इसमें (व्यवहार में) फर्स्ट क्लास हो जाएगा। वह कुशलता है न एक प्रकार की! लेकिन कहे अनुसार करोगे तो। बार-बार मौका नहीं मिलेगा ऐसा। यह आखिरी मौका है। उठा लो फायदा इस आखिरी मौके का!

ज्ञानी परिचय से काम निकाल लो

अतः अब कुछ निबेड़ा लाओ। अनादि से मार खाते आए हो और उसमें ऐसा कौन सा सुख है? सात्विक रूप से पता नहीं लगाना चाहिए कि इसमें कोई सुख नहीं दिखता? बल्कि मूर्खता हो जाती है, फूलिशनेस हो जाती है। विषय से दूर रहा तो भगवान बनकर खड़ा रहेगा और विषय में यदि लटका तो अधोगति में, नर्क में जाने पर भी अंत नहीं आएगा, ऐसा हमने ज्ञान से देखा है। अब आपको विश्वास हो गया न? आज आपको ऐसा ज्ञान हो गया न कि 'यह गलत हुआ है?' यह कोई ऐसा-वैसा ज्ञान नहीं है। 'यह गलत है' ऐसा ज्ञान हुआ, उसी को हम 'ज्ञान' कहते हैं। वापस पलटने लगा मतलब काम ही निकाल लेगा। यह तो, कोई दीया धरने वाला होना चाहिए, कोई दीया धरने वाला नहीं हो तो क्या होगा?

यह बाहर का जो परिचय है, वह उल्टा परिचय है और अभी तक ज्ञानियों से पूरा परिचय नहीं हुआ है। यदि परिचय हुआ होता तो ऐसा नहीं होता। इसलिए ज्ञानियों के पास पड़े रहना है। बाहर के परिचय से ही तो यह सारी मार खाई है न! बाहर के परिचय से सबकुछ बिगड़ता ही रहता है। यदि ब्रह्मचर्य पालन करना हो तो बाहर का परिचय भी रखे और ब्रह्मचर्य का पालन कर सके, ये दोनों एक साथ नहीं हो सकते! वह तो पूरा समूह होना चाहिए, अलग निवास स्थान होना चाहिए, वहाँ

साथ में बैठकर बातचीत करें, सत्संग करें, थोड़ी देर आनंद करें। उनकी दुनिया ही नई! इसके लिए तो ब्रह्मचारी साथ में रहने चाहिए। सब साथ में नहीं रहें और घर पर रहें तो परेशानी! ब्रह्मचारियों के संग के बिना ब्रह्मचर्य का पालन नहीं किया जा सकता। ब्रह्मचारियों का समूह होना चाहिए और वह भी पंद्रह-बीस लोग का होना चाहिए। सभी साथ में रहेंगे तो दिक्कत नहीं आएगी। दो-तीन लोगों का काम नहीं है। पंद्रह-बीस होंगे तो उनकी तो हवा ही लगती रहेगी। हवा से ही सारा वातावरण उच्च प्रकार का रहेगा, वर्ना ब्रह्मचर्य पालन करना आसान नहीं है। संग एक ही प्रकार का होना चाहिए। दूसरा संग नहीं घुसना चाहिए। दूध तो दूध और दही तो दही, और दूध और दही पास-पास रखे हों, तो भी दूध फट जाता है। फिर चाय नहीं बन सकेगी।

ज्ञानी का प्रयोग, जागृति के लिए

यह 'अक्रम विज्ञान' है ही बहुत उच्च कक्षा का। हमने तो सब निरीक्षण करके अपने अनुभव से यह पूरा विज्ञान रखा है। मेरे कितने ही जन्मों पहले के निरीक्षण होंगे, वह आज आपके अंदर अंकित हो गया।

हमने तो कई जन्मों से भाव किए थे। इसलिए हमें तो विषय के प्रति बहुत ही चिढ़। ऐसा करते-करते वे छूट गए। विषय हमें मूलत: अच्छा ही नहीं लगता था लेकिन क्या करें? कैसे छूटें? लेकिन हमारी दृष्टि बहुत गहरी, बहुत विचारशील, यों कैसे भी कपड़े पहने हों, फिर भी सबकुछ आरपार दिखता था, दृष्टि की वजह से यों ही चारों ओर का बहुत कुछ दिखता था। इसलिए राग नहीं होता न?

मैंने जो प्रयोग किया था, उसी प्रयोग का उपयोग करना है। हमारे अंदर वह प्रयोग निरंतर सेट ही रहता है, इसलिए हमें ज्ञान होने से पहले भी जागृति रहती थी। यों सुंदर कपड़े पहने हों, दो हज़ार की साड़ी पहनी हो, फिर भी देखते ही तुरंत जागृति खड़ी हो जाती थी, वह नेकेड दिखती थी। फिर दूसरी जागृति उत्पन्न होती थी, तो बिना चमड़ी की दिखती और तीसरी जागृति में फिर पेट काट दिया हो तो अंदर आंते दिखती थी, आंतों में क्या-क्या होता है, वह सबकुछ दिखता था। अंदर खून की नसें दिखतीं, संडास दिखती, इस तरह सारी गंदगी दिखती। फिर विषय खड़ा होता ही नहीं था न! इनमें से सिर्फ आत्मा ही शुद्ध वस्तु है, वहाँ जाकर हमारी दृष्टि रुकती है, फिर मोह कैसे होगा? लोगों को इस तरह आरपार दिखता नहीं है न? लोगों के पास ऐसी दृष्टि नहीं है न? ऐसी जागृति लाएँ भी कहाँ से? ऐसा दिखना, वह तो बहुत बड़ी जागृति कहलाती है। एट-ए-टाइम ये तीनों प्रकार की जागृति रहती हैं। मुझे जैसी जागृति थी, वह आपको बता रहा हूँ। जिस तरीके से मैं जीता हूँ, वह तरीका आप सभी को, यह जीतने का रास्ता बता दिया। रास्ता तो होना चाहिए न? और जागृति के बिना तो ऐसा कभी होगा ही नहीं न?

जागृति में झौंके, वहाँ विषय के सोटे

प्रश्नकर्ता : इस ज्ञान की जागृति से प्रकृति के सामने बहुत बड़ा फोर्स खड़ा हो गया है।

दादाश्री : हाँ। यह ज्ञान है इसलिए प्रकृति के सामने जीत ज़रूर जाता है, लेकिन साथ ही साथ अपना जो अस्तित्व है, वह ज्ञान के साथ होना चाहिए। अस्तित्व अगर *पुद्गल* के साथ रहेगा तो खत्म कर देगा। यानी स्व-परिणामी होना चाहिए।

उन विचारों में मिठास लगे तो हो गया, वे फिर खत्म कर देंगे। क्योंकि उस ओर पर-परिणाम हुए। अब वे विचार ऐसे होते हैं न कि मिठास आए? या कड़वाहट आती है?

प्रश्नकर्ता : मिठास आए ऐसे आते हैं!

दादाश्री : इसीलिए वहाँ सावधान रहना है! ऐसा विवेचन और कहीं पर तो नहीं कर सकते न! यह तो विज्ञान है इसलिए विवेचन कर सकते हैं। यह रोग कोई निकालता ही नहीं है न! यह रोग कैसे निकले? इसका इलाज अपने यहाँ होता है। यहाँ पर स्त्रियाँ बैठी हों, फिर भी अपने यहाँ दिक्कत नहीं आती। और कहीं पर तो ऐसी बात होती ही नहीं न!

जागृति मंद हुई कि विषय घुस जाता है। जागृति मंद हुई कि फिर उसे धक्का लगता है। विषय एक ऐसी खराब चीज़ है कि उसमें एक बार फिसल जाए तो फिर जागृति पर गाढ़ आवरण आ जाता है। उसके बाद अगर जागृति रखनी हो, फिर भी नहीं रह पाती। जब तक एक भी बार गिरा नहीं है, तब तक जागृति रहती है। शायद आवरण आ जाए, लेकिन जागृति तुरंत ही आ जाती है। लेकिन एक ही बार फिसला तो ज़बरदस्त गाढ़ आवरण आ जाता है, फिर सूर्य-चंद्र नहीं दिखते। एक ही बार फिसले तो भी बहुत नुकसान है।

प्रश्नकर्ता : जागृति मंद यानी 'एक्चुअली' (वास्तव में) कैसे होता है?

दादाश्री : एक बार आवरण आ जाता है उसे। वह (ब्रह्मचर्य) शक्ति को संभालने वाली जो (निश्चय) शक्ति है न, उस शक्ति पर आवरण आ जाता है, उसका काम करना मंद हो जाता है। फिर उस समय जागृति मंद हो जाती है। उस शक्ति के मंद होने के बाद कुछ नहीं हो सकता, कुछ नहीं होता। बाद में वापस मार खाता है, फिर मार खाता ही रहता है। फिर मन, वृत्तियाँ, वगैरह सब उसे उल्टा ही समझाते हैं कि, 'हमें तो अब कोई हर्ज नहीं। इतना सब तो है न?' फिर ऐसा समझाने वाले वकील अंदर होते हैं, उस वकील का जजमेन्ट (आर्ग्युमेन्ट) वापस शुरू हो जाता है।

प्रश्नकर्ता : उस शक्ति की रक्षा करने वाली शक्ति यानी क्या?

दादाश्री : एक बार स्लिप हुआ, तो अंदर जो स्लिप नहीं होने की शक्ति थी, वह घिस जाती है यानी वह शक्ति ढीली पड़ जाती है। इसलिए फिर बोतल यों टेढ़ी हुई कि दूध अपने आप ही बाहर निकल जाता है, जबकि पहले तो हमें ढक्कन निकालना पड़ता था। यह तुझे समझ में आया?

असंयम परिणाम से शक्ति होती है अधोगामी

प्रश्नकर्ता : एक असंयम परिणाम से फिर गुणन से ही (मल्टीप्लाई होकर) पूरा डाउन में चला जाता है और असंयम बढ़ता ही जाता है। ऐसा न?

दादाश्री : हाँ, तो असंयम बढ़ता ही जाता है न! इसलिए वापस ढीला ही पड़ता जाता है। एक तो ढीला पड़ा हुआ है और वापस ढीला पड़ गया, तो फिर रहा ही क्या? बाद में तो अंदर मन-बुद्धि सलाह देने वाले और अंदर जज व बाकी सभी गवाही देने वाले निकल आते हैं। तेरे कभी ऐसे गवाही देने वाले नहीं आते?

प्रश्नकर्ता : हाँ, आते हैं न। लेकिन मेरे साथ कैसा होता है कि, पहले यों ग्राफ ऊपर जाता है, फिर जागृति मंद होती हुई दिखाई देती है, फिर पता चल जाता है कि अब डाउन होने लगा है। इसलिए फिर वापस तुरंत जोश आ जाता है कि यह तो गलती हो रही है, कहीं। इसलिए फिर पता लगाते हैं और वापस ऊपर आ जाता है, लेकिन ऐसे डाउन हो ज़रूर जाता है!

दादाश्री : हाँ, लेकिन अगर वह डाउन हो जाए तो, वह कब तक चल सकता है? जब तक हमसे एक बार भी गलती नहीं हो, तब तक चल सकता है, लेकिन एक बार गलती हुई कि ढीला पड़ जाता है। संसारीपने में हज़ार बार भूल खा

जाए तो उसमें हर्ज नहीं है क्योंकि जब ढीला हो ही गया है तो फिर उसमें हर्ज ही क्या? उसी को ढीला पड़ना कहते हैं न! लेकिन यहाँ तो (ब्रह्मचर्य में) तुमने टाइट रखा है, उसे टाइट ही रखना है, और यदि वह शक्ति ऊर्ध्वगामी हो गई तो बहुत काम निकाल देगी।

प्रश्नकर्ता : वह किस प्रकार के दोष से ढीला होना शुरू होता है?

दादाश्री : संयम, असंयम हुआ कि ढीला हो ही जाता है। संयम जब तक संयमभाव में रहता है, तब तक ढीला नहीं पड़ता। यों कम-ज़्यादा होता रहे तो उसमें हर्ज नहीं है। लेकिन वह संयम टूटा कि फिर हो चुका। वह संयम कब टूटता है? कि 'व्यवस्थित' के पिछले संधान हों, तब टूटता है। और टूटने के बाद फिर उसे मटियामेट कर देता है।

पुद्गल का खिंचाव, डाले विषय अंधकार में

मूर्च्छा चली जाए तो फिर हर्ज नहीं। मूर्च्छा ही निकालनी है। 'मेरी मूर्च्छा चली गई' ऐसा कहने से कुछ नहीं होगा, मूर्च्छा तो एक्ज़ेक्ट रूप से जानी ही चाहिए। और वह भी ज्ञानीपुरुष से टेस्ट करवा लेना चाहिए कि 'साहब, मेरी मूर्च्छा गई या नहीं, वह टेस्ट करके दीजिए।' वर्ना अंदर तो ऐसी ऐसी वकालत चलती है कि, 'बस, अब सारी मूर्च्छा चली गई है, अब कोई हर्ज नहीं है!' यानी वकालत करने वाले बहुत हैं न! इसलिए जागृत रहना। जहाँ अपराध होने की संभावना हो, ऐसी जगह पर से खिसक जाना। आत्मा तो दिया है और वह आत्मा असंग स्वभाव का है, निर्लेप स्वभाव का है। लेकिन अनंत जन्म से *पुद्गल* की खेंच है। आप अलग हुए, लेकिन *पुद्गल* की खेंच छोड़ती नहीं है न! वह खेंच जाती नहीं है न! स्त्री-पुरुष के आकर्षण में वह जागृति नहीं रखी तो *पुद्गल* की खेंच उसे अंधेरे में डाल देगी।

ब्रह्मचर्य पद में समझा जा सकता है आत्मसुख

आत्मा का सच्चा सुख तो ये ब्रह्मचारी ही चख सकते हैं। जो स्त्रीरहित पुरुष हैं, वे ही चख सकते हैं। फिर उन्हें जल्दी 'स्टडी' (अभ्यास) हो जाती है। क्योंकि जो शादीशुदा हैं उनके पास, यह सच्चा सुख है या वह, उन दोनों की तुलनात्मक दृष्टि नहीं है। फिर भी चलने दो न गाड़ी! जो शादीशुदा हैं उनसे हम ऐसा थोड़े ही कह सकते कि तू कुँवारा हो जा! इसलिए हमने उन्हें 'समभाव से निकाल' करने को कहा है। लेकिन बात को समझो, ऐसा भी कहते हैं। विषय में तो मरने जैसा दु:ख होता है। विषय हमेशा परिणाम में कड़वा है। शुरुआत में उसे ऐसा लगता है कि यह विषय सुखदायी है, लेकिन परिणाम में तो कड़वा ही है। उसका विपाक भी कड़वा है। इसके बाद थोड़ीदेर के लिए तो इन्सान मुर्दे जैसा हो जाता है।

वास्तविक सिन्सियारिटी से अस्त होगा विषयरस

यह ज्ञान, यह निश्चय सबकुछ हम ऐसे सेट करके रखें ताकि इस मोहनीय परिणाम में भी हमें डगमगा नहीं दे। इस काल की बड़ी विचित्रता यह है कि इस काल के सभी लोग महा मोहनीय वाले हैं। इसलिए उन्हें 'कैसे हो?' पूछना। लेकिन उनसे नज़र नहीं मिलानी चाहिए, नज़र मिलाकर बातचीत भी नहीं करनी चाहिए। क्योंकि सिर्फ यह विषयरस ही ऐसा है कि जो(हमारा) सर्वस्व गँवा दे। सिर्फ अब्रह्मचर्य ही महा-मुश्किल वाला है। नहीं तो सुबह-सुबह तय कर लेना कि 'इस जगत् की कोई भी विनाशी चीज़ मुझे नहीं चाहिए', फिर उसके प्रति सिन्सियर रहना है। अंदर तो बहुत से लबाड़ हैं कि जो सिन्सियर नहीं रहने देते, लेकिन यदि निश्चय के प्रति सिन्सियर रहे तो फिर उसे कोई चीज़ बाधक नहीं रहेगी।

जितना तू सिन्सियर, उतनी ही तेरी जागृति। जितनी इसमें सिन्सियारिटी उतना ही खुद का (काम) होता है और यह सिन्सियारिटी तो ठेठ मोक्ष की ओर ले जाती है। इसलिए सभी जगह सिन्सियर हो जाओगे तो तुम जीत जाओगे! इस जगत् को जीतना है। जगत् को जीत लोगे तो मोक्ष मिलेगा। जगत् को जीते बगैर कोई मोक्ष में नहीं जाने देगा।

वास्तविक ब्रह्मचारी कल्याण के निमित्त

जगत् जीतने के लिए एक ही चाबी बताता हूँ कि, यदि विषय विषयरूप नहीं बने तो पूरे जगत् को जीत लेगा। क्योंकि वह व्यक्ति फिर शीलवान माना जाएगा। जगत् का परिवर्तन कर सकेगा। आपका शील देखकर ही सामने वाले में परिवर्तन हो जाएगा। ब्रह्मचर्य रहे तो लोगों का कल्याण करने में फिर निमित्त बन सकेगा!

अगर एक ही सच्चा इंसान होगा तो जगत् कल्याण कर सकेगा! संपूर्ण आत्मभावना होनी चाहिए। एक घंटे तक भावना करते रहना और अगर टूट जाए तो जोड़कर वापस शुरू कर देना। यह भावना की है तो भावना का जतन करना!

जगत् का कल्याण अधिक से अधिक कब हो सकता है? त्यागमुद्रा हो, तब अधिक होता है। गृहस्थमुद्रा में जगत् का कल्याण अधिक नहीं हो सकता, ऊपर-ऊपर सब होता है। लेकिन भीतर में सारी पब्लिक प्राप्ति नहीं कर पाएगी! त्याग अपने जैसा होना चाहिए। अपना त्याग, वह अहंकारपूर्वक नहीं है न?! और यह चारित्र तो बहुत उच्च कहलाता है!

शुद्ध चारित्र की नींव पर है मोक्षमार्ग

ब्रह्मचर्य को हम समझें तो वह (विषय) कंट्रोलेबल हो सकता है। विषय में जो दोष हैं, उसे जानेंगे, तो कंट्रोलेबल हो सकेगा। मैं इन सभी को इसीलिए ब्रह्मचर्य के बारे में समझाता हूँ। क्योंकि चारित्र की बुनियाद पर मोक्षमार्ग कायम है। आपको यदि खाना-पीना है, तो उसमें हर्ज नहीं है। सिर्फ शराब या मांसाहार नहीं करना चाहिए। बाकी सबकुछ, पकौड़े-जलेबी खाने हों तो खाना, उसका हल ला दूँगा। अब इतनी छूट देने के बावजूद भी यदि आप अच्छी तरह से आज्ञा में नहीं रह पाओ तो क्या हो सकता है? कृपालुदेव ने तो यहाँ तक कहा है कि 'तेरी पसंद की थाली दूसरों को दे देना।' अपने यहाँ तो क्या करने को कहा है कि 'तुझे जिससे शांति मिलती है, वैसा तू कर। तू अपनी पसंद की थाली दूसरों को मत देना, आराम से खाना।' आपको तो चारित्र की बुनियाद मज़बूत रखनी है। मोक्ष में जाने के लिए वही एक मूल चीज़ है।

ब्रह्मचर्य व्रत से मिलेगा शुद्धात्मा का वैभव

आपको, 'मैं शुद्धात्मा हूँ' का भान हुआ यानी मोक्ष का 'वीज़ा' मिल गया और आपकी गाड़ी चल पड़ी, लेकिन वह शब्द रूप में भान हुआ है। जब वह अंत में निरालंब तक पहुँचेगा, तब वह केवलज्ञान कहलाता है।

जगत् के लोगों ने कहा, 'परस्पर देवो भव:'। अरे, लेकिन कब तक परस्पर? अत: जो निरालंब सुख है उसकी तो बात ही अलग है न! अरे! शुद्धात्मा का जो सुख है उसकी भी बात अलग ही है न! 'मैं शुद्धात्मा हूँ' कहा कि बाहर के सारे विचार चले जाते हैं। जिसे 'शुद्धात्मा में ही सुख है', ऐसा यथार्थ रूप से समझ में आ जाए, उसे विषय में सुख नहीं लगेगा।

'मैं शुद्धात्मा हूँ' वह निरंतर *लक्ष* (जागृति) में रहे, तो वह महानतम् ब्रह्मचर्य है। उसके जैसा ब्रह्मचर्य और कुछ भी नहीं है। फिर भी अगर

अंदर आचार्यपद प्राप्त करने के भाव हों, तब तो वहाँ बाहर का ब्रह्मचर्य चाहिए, वहाँ लेडी नहीं चलेगी।

जिसे शुद्धात्मा का वैभव देखना हो, उसके लिए ब्रह्मचर्य व्रत अत्यंत हितकारी है। हम भी रिलेटिव में इस एक ही व्रत के लिए हेल्प करते हैं, बाकी हम और किसी चीज़ में हस्तक्षेप नहीं करते। इस ज्ञान में यदि सचमुच में कोई चीज़ मददगार है तो वह ब्रह्मचर्य ही है। ब्रह्मचर्य पालन करोगे तो ऐसा सुख भोगोगे, जो कि देवलोक भी नहीं भोगते, लेकिन अगर पालन नहीं कर पाए और बीच में ही फिसल गए तो मारे जाओगे!

बाकी वास्तविक ब्रह्मचर्य अर्थात् आत्मचर्या में ही अपना उपयोग और *पुद्गल* अर्थात् विषयचर्या में उपयोग नहीं। यानी सिर्फ आत्मरमणता, *पुद्गल* रमणता नहीं। अन्य *पुद्गल* रमणता उतनी बाधक नहीं है लेकिन विषय से संबंधित *पुद्गल* रमणता तो ठेठ आत्मा का अनुभव भी नहीं करने देती। ब्रह्मचर्य व्रत, वह महान व्रत है और उससे आत्मा का स्पेशल अनुभव हो जाता है।

सच्चा ज्ञान छुड़वाएगा विषय सुख की बिलीफ

ज्ञान ऐसी चीज़ है, जिसे जान लेने की ज़रूरत है। ज्ञान को जान लेना। ज्ञान जानना है और वह जाना हुआ जब दर्शन में आता है, 'बिलीफ' में आता है, तब सभी विषय गायब हो जाते हैं।

यह ज्ञान तो बहुत अच्छा है, लेकिन अब उस चेतक को मज़बूत कर लेना है। जब लगे कि विषय में सुख है, तो वहाँ पर 'चेतक' बिठाने की ज़रूरत है। विषय का आराधन तो इस तरह से होना चाहिए कि जैसे पुलिस वाला ज़बरदस्ती करवा रहा हो। यह चेतक हमने आपमें बिठा दिया है। लेकिन इस चेतक को इतना मज़बूत कर लेना है कि पुलिस वाले का भी विरोध करे। लेकिन यदि आप उस चेतक की नहीं सुनोगे तो चेतक निर्माल्य हो जाएगा। आप यदि उस चेतक का सम्मान करोगे, उसे खुराक दोगे तो उसे पुष्टि मिलेगी! आप उस चेतक के ज्ञाता-दृष्टा हो और चेतक 'चंदूभाई' को चेतावनी देता रहेगा, 'चंदूभाई' चेतक की सुनते हैं या नहीं, वह आपको देखना है।

सुख की 'बिलीफ' तो स्वरूप में ही रहनी चाहिए। 'विषय में सुख है,' ऐसा 'बिलीफ' में रहना ही नहीं चाहिए। वह तो, केवलदर्शन की तरह 'स्वरूप में ही सुख है,' ऐसा 'बिलीफ' में रहना चाहिए। इस तरह यदि चेतक मज़बूत कर लिया तो फिर हर्ज नहीं।

अंततः समझ ही दिलवाएगी मुक्ति

ज्ञानीपुरुष की आज्ञा से चारित्र लेने में हर्ज नहीं, लेकिन इसके साथ ही चारित्र लेने के बाद इस चीज़ पर इतना अधिक सोच लेना चाहिए कि उस सोच के अंत में खुद का ही मन ऐसा हो जाए कि विषय तो बहुत ही गलत चीज़ है। यह तो महा-महा मोह के कारण उत्पन्न हुई चीज़ है। ब्रह्मचर्य तो, जब मन बिल्कुल भी नहीं डिगे, तब वह ब्रह्मचर्य दिमाग़ में घुसता है और बाद में उसकी वाणी-वर्तन सभी कुछ बदल जाता है! ब्रह्मचर्य पालन करना हो तो 'ज्ञानीपुरुष' से समझ लेना चाहिए। पहले यह ज्ञान समझ लेना पड़ेगा और यह ज्ञान समझ में आना चाहिए।

जितना समझा उतना समा जाएगा। जितना समा गया उतनी मुक्ति। यहीं पर मुक्ति का अनुभव हो जाएगा। समा जाना यानी मोक्ष में, खुद के 'स्वरूप' में समा जाना।

- जय सच्चिदानंद

दादाई जगकल्याण मिशन - सत्संग हाइलाईट्स

18-21 नवम्बर : कलकत्ता में पूज्य श्री की निश्रा में प्रथम दिन महात्माओं के लिए एक दिवसीय पिकनिक का आयोजन हुआ। जिसमें 180 महात्माओं की उपस्थिति थी। इस साल बहुत सालों के बाद कलकत्ता में सत्संग स्थल में बदलाव हुआ था। बंगाल और आसपास के राज्यों में से बहुत मुमुक्षु-महात्मा आए थे। 450 मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान की प्राप्ति की। कलकत्ता में पूज्य श्री के शुभ करकमलों द्वारा 'दादा सत्संग सेन्टर' का उद्घाटन हुआ।

22-24 नवम्बर : भिलाई सेन्टर में छः वर्षों के बाद पूज्य श्री का सत्संग-ज्ञानविधि कार्यक्रम आयोजित हुआ। इस दौरान पूज्य श्री भिलाई और रायपुर के दादा सेन्टर देखने गए। पूज्य श्री ने समर्पित सेवार्थी महात्माओं के साथ मॉर्निंग वॉक किया और GNC के बच्चों ने सेवार्थी सत्संग के दौरान नृत्य द्वारा सुंदर प्रज़ेन्टेशन किया। 150 सेवार्थियों के लिए इन्फॉर्मल सत्संग के बाद 'दादा दरबार' का आयोजन हुआ। ज्ञानविधि में 510 मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान की प्राप्ति की।

25-28 नवम्बर : भारत की राजधानी दिल्ली में हर साल की तरह इस साल भी पूज्य श्री का तीन दिवसीय के लिए सत्संग और ज्ञानविधि के कार्यक्रमों का आयोजन हुआ। पूज्य श्री द्वारा 'नीति-प्रमाणिकता' और 'टालो कर्तापद की भ्रांति' टॉपिक पर सुंदर सत्संग हुआ और मुमुक्षुओं ने भी अपने प्रश्नों के संपूर्ण समाधान प्राप्त किया। न्यूयॉर्क से आए दो महात्माओं ने अपने ज्ञान के सुंदर अनुभवों का वर्णन किया। विदेश से आए हुए छः मुमुक्षुओं ने भी ज्ञान की प्राप्ति की।ज्ञानविधि में 850 मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान की प्राप्ति की। सेवार्थी सत्संग में 160 महात्माओं ने पूज्य श्री के सत्संग व दर्शन का लाभ प्राप्त किया। यजमान महात्मा के घर पर पंजाबी स्टाइल में सभी महात्मागण भक्ति करने में सराबोर हो गए।

2-4 दिसम्बर : अडालज के त्रिमंदिर संकुल में पूज्य नीरू माँ के 73वे जन्म दिन पर विशेष कार्यक्रम का आयोजन हुआ। सुबह 6:30 बजे अंबा टाऊन शीप से प्रभात फेरी निकली, जिसमें पूज्य नीरू माँ की पालकी बहुत सुंदर तरीके से सजाई गई थी और सभी महात्माओं को लाल रंग के गुब्बारे प्रेम के प्रतीक के तौर पर दिए गए। इस अवसर पर पूज्य श्री ने समाधि स्थल पर दर्शन करके संदेश दिया। त्रिमंदिर के नीचे के जायजेन्टिक हॉल के स्टेज पर पूज्य नीरू माँ की 18 फीट, विशाल मनोहारी फोटो रखी गई और दूसरे पाँच अलग-अलग मुद्रावाले कट आउट स्टेज पर लगाए गए थे और दूसरे बहुत से फोटो फ्लेक्सों के द्वारा हॉल में रखे गए। रात को भक्ति के विशेष कार्यक्रम में स्वरमणा के मूल गायकों द्वारा सुंदर पद प्रस्तुत किए गए। जिन्हें सुनकर श्रोता महात्मा आनंदित हो उठे इसलिए कार्यक्रम देर रात तक चला था। पूज्य श्री द्वारा बर्थ डे केक काटा गया। इस बार महात्माओं द्वारा लगभग 300 केक बनाए गए, जिनका वजन 515 किलो था। उसके बाद आयोजित सत्संग और ज्ञानविधि में 1010 मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान की प्राप्ति की।

7-19 दिसम्बर : सौराष्ट्र के छः छोटे-बड़े शहरों में पूज्य श्री के सत्संग और ज्ञानविधि के कार्यक्रम आयोजित हुए। शुरुआत मोरबी शहर से हुई थी। स्थानीय महात्माओं ने पूज्य श्री को लाल रंग की काठियावाड़ी पगड़ी पहनाकर उल्लास से स्वागत किया था। पूज्य श्री मोरबी त्रिमंदिर में दर्शन के लिए गए थे। पूज्य श्री द्वारा जामनगर में नए 'दादा सेन्टर' का उद्घाटन हुआ। ध्रोल, उपलेटा और गोंडल में पहली बार ज्ञानविधि का आयोजन हुआ। ज्ञानविधि के पहले और बाद में आप्तपुत्र सत्संग आयोजित हुए थे जिससे कि पूज्य श्री द्वारा कम समय में ज़्यादा जगहों पर ज्ञानविधि हो पाई। इन जगहों पर दादा भगवान परिवार सत्संग केन्द्र नियमित रूप से चलते हैं। इन जगहों पर ज्ञानविधि का आयोजन होने से बहुत बड़ी संख्या में स्थानीय मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान की प्राप्ति की। गोंडल में सेवार्थी सत्संग के दौरान कुछ महात्माओं ने पहले से व्यसन छोड़ने का निश्चय करके पूज्य श्री से विधि करवाई और उसी समय उन्होंने प्रतिज्ञा ली थी। प्रत्येक सेन्टर पर पूज्य श्री के आगमन पर महात्माओं द्वारा बहुत उल्लास और भाव से स्वागत हुआ था। प्रत्येक सेन्टर पर सेवार्थी सत्संग का आयोजन हुआ था, जहाँ स्थानीय महात्माओं को 'सेवा' टॉपिक पर सत्संग और व्यक्तिगत दर्शन का लाभ प्राप्त हुआ था। राजकोट में पूज्य श्री त्रिमंदिर में दर्शन के लिए गए और सेवार्थियों से मिले। पंद्रह दिनों में सात जगहों पर हुई ज्ञानविधि में 10,060 मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान की प्राप्ति की। जिसमें अडालज में 1010, मोरबी में 850, जामनगर में 1300, ध्रोल में 1300, उपलेटा में 1350, गोंडल में 1550 और राजकोट में 2700 मुमुक्षु थे यह इतने कम समय में उतनी ज़्यादा सख्या का नया रिकॉर्ड स्थापित बना।

आत्मज्ञानी पूज्य नीरू माँ और पूज्य दीपकभाई के आशीर्वाद प्राप्त आप्तपुत्रों के सत्संग कार्यक्रम

बेलगाम **दिनांक :** 4 फरवरी **संपर्क :** 9945894202 - **समय और स्थल की घोषणा बाकी।**

बेलगाम **दिनांक :** 5 फरवरी **समय :** दोपहर 3-30 से 6 **संपर्क :** 9448187790
स्थल : जीवेश्वर भवन, मेईन रोड, वडगाँव, बेलगाम.

कोल्हापुर **दिनांक :** 6 फरवरी **समय :** दोपहर 3 से 6 **संपर्क :** 9960787776
स्थल : पाटीदार भवन होल, टीम्बर मार्केट, कोल्हापुर.

हुबली **दिनांक :** 8 फरवरी **समय :** शाम 5-30 से 7-30 **संपर्क :** 9448187790
स्थल : नारणजी कानजी सभागृह, सर्वोदय सर्कल, केशवापुर, हुबली.

हुबली **दिनांक :** 9 फरवरी **समय :** दोपहर 3-30 से 6 **संपर्क :** 9900525645
स्थल : पाटीदार भवन, उँकल टीम्बर यार्ड, उँकल, हुबली.

बेंगलोर **दिनांक :** 10-12 फरवरी **संपर्क :** 9590979099 - **समय और स्थल की घोषणा बाकी।**

पूज्य नीरूमाँ को देखिए टी.वी. चैनल पर...

भारत
- **'आस्था'** पर सोम से शनि रात 10-20 से 10-40 (हिन्दी में)
- **'डीडी'-इन्डिया** पर हर रोज़ शाम 6 से 6-30 (हिन्दी में)
- **'दूरदर्शन'-बिहार** पर हर रोज़ सुबह 7-30 से 8 तथा शाम 6-30 से 7 (हिन्दी में)
- **'दूरदर्शन'-गिरनार** हर रोज़ पर सुबह 9 से 9-30 (गुजराती में)
- **'अरिहंत'** पर हर रोज़ शाम 5 से 5-30 (गुजराती में)

USA
- **'TV Asia'** पर हर रोज, सुबह 7-30 से 8 EST (गुजराती में)
- **'कलर्स' टीवी** पर हर रोज़ सुबह 8 से 8-30 EST (हिन्दी में)

UK
- **'वीनस' टीवी** पर हर रोज़ सुबह 8 से 8-30 (हिन्दी में)
- **'कलर्स' टीवी** पर हर रोज़ सुबह 7 से 7-30 (हिन्दी में)

पूज्य दीपकभाई को देखिए टी.वी. चैनल पर...

भारत
- **'दूरदर्शन'-नेशनल** पर सोम से शुक्र सुबह 8-30 से 9, शनि सुबह 9 से 9-30, रवि सुबह 6-30 से 7
- **'दूरदर्शन'-मध्यप्रदेश** पर सोम से शनि दोपहर 3-30 से 4, रवि शाम 6 से 6-30 (हिन्दी में)
- **'दूरदर्शन'-उत्तरप्रदेश** पर हर रोज़ रात 9-30 से 10 (हिन्दी में)
- **'दूरदर्शन' गुजरात - गिरनार** पर हर रोज़ दोपहर 3-30 से 4 (गुजराती में)
- **'दूरदर्शन' गिरनार** पर हर रोज़ रात 10 से 10-30 (गुजराती में)
- **'अरिहंत' चेनल** पर हर रोज़ रात 8 से 9 (गुजराती में) **(15 जनवरी से समय में बदलाव)**
- **'दूरदर्शन'-सह्याद्रि** पर हर रोज़ सुबह 7 से 7-30 (मराठी में)

USA
- **'कलर्स' टीवी** पर हर रोज़ सुबह 7 से 7-30 EST (हिन्दी में)

UK
- **'वीनस' टीवी** पर हर रोज़ सुबह 8-30 से 9 (गुजराती में)

Singapore
- **'कलर्स' टीवी** पर हर रोज़ सुबह 4-30 से 5 तथा सुबह 7 से 7-30 (हिन्दी में)

Australia
- **'कलर्स' टीवी** पर हर रोज़ सुबह 7-30 से 8 तथा सुबह 10 से 10-30 (हिन्दी में)

New Zealand
- **'कलर्स' टीवी** पर हर रोज़ सुबह 9-30 से 10 तथा रात 12 से 12-30 (हिन्दी में)

USA-UK-Africa-Aus.
- **'आस्था'** (डीश टीवी चेनल 849-युके, 719-युएसए) पर हर रोज़ रात 10 से 10-30

अडालज त्रिमंदिर

17 मार्च (शुक्र), शाम 4 से 7 - **सत्संग** तथा **18 मार्च** (शनि), शाम 4 से 7-30 - **ज्ञानविधि**

18 मार्च (शनि), सुबह 10 से 12 -**आप्तपुत्र सत्संग**

19 मार्च (रवि), शाम 4-30 से 10- **पू. नीरू माँ की 11वी पुण्यतिथि पर विशेष कार्यक्रम**

Pujya Deepakbhai's UK Satsang Schedule (2017)

Contact no. for all centers in UK + 44-330-111-DADA (3232), email:info@uk.dadabhagwan.org

Date	From	to	Event	Venue
31-Mar-17	7-30PM	10PM	Satsang	Shree Prajapati Association, Ulverscroft Road, Leicester, LE4 6BY
1-Apr-17	7-30PM	10PM	Satsang	
2-Apr-17	10-30AM	12-30PM	Aptaputra Satsang	
2-Apr-17	3PM	7-30PM	Gnanvidhi	
21-Apr-17	7-30PM	10PM	Satsang in English	Harrow Leisure Centre, Byron Hall, Christchurch Avenue, Harrow, HA3 5BD
22-Apr-17	10-30AM	12-30PM	Aptaputra Satsang in English	
22-Apr-17	7-30PM	10PM	Satsang	
23-Apr-17	10-30AM	12-30PM	Aptaputra Satsang	
23-Apr-17	3PM	7-30PM	Gnanvidhi	
24-Apr-17	7-30PM	10PM	Satsang	

अडालज त्रिमंदिर में हिन्दी सत्संग शिविर - वर्ष 2017

25-29 मई (गुरु-सोम) - **सत्संग समय की घोषणा बाकी**

सूचना : 1) यह शिविर गुजराती भाषा नहीं जानने वाले मुमुक्षु-महात्माओं के लिए साल में एक बार हिन्दी में विशेष रूप से आयोजित की जाती है 2) भाग लेनेवाले महात्माओं को अपने नज़दीकी सत्संग केन्द्र पर अपना रजिस्ट्रेशन करवाना आवश्यक हैं। 3) 29 मई को एक दिवसीय यात्रा का भी आयोजन किया गया है।

यदि आप 29 मई को आयोजित यात्रा में शामिल होनेवाले हों, तो आपका वापसी टिकट 30 मई का लें। रेल्वे टिकट रिझर्वेशन चार महिने पहले एडवान्स में होता है, इसलिए यह जानकारी आपको टिकट बुक करने हेतु दी जा रही है।

'दादावाणी' के वार्षिक सदस्यों के लिए सूचना

आपको आपकी दादावाणी पत्रिका की सदस्यता समाप्त हो रही है उसका पता कैसे चलेगा? यदि आपको मिली इस महीने की दादावाणी पत्रिका के कवर पर लगे हुए लेबल पर ग्राहक नं. के बाद # हो तो यह आपकी अन्तिम दादावाणी पत्रिका है। उदा. DHIA12345#. दादावाणी पत्रिका रिन्यु कराने के लिए पेज नं. 3 पर दर्शाये गए मूल्य अनुसार मनी आर्डर या डिमान्ड ड्राफ्ट (पेयेबल अहमदाबाद) त्रिमंदिर अडालज के पते पर भेजें। साथ ही अपना नाम, पूरा पता (पिनकोड के साथ), फोन-मोबाइल नंबर, इ-मेल आदि आवश्यक जानकारी दें।

'दादावाणी' के सभी सदस्यों के लिए सूचना

हिन्दी और अंग्रेजी भाषाओं में दादावाणी पत्रिका हर महिने 15वी तारीख को पोस्ट की जाती है। जिन महात्माओं को 'दादावाणी' पत्रिका विलंब से या तो अनियमित रूप से मिलती है, वे पूर्व प्राप्त पत्रिका के कवर पर अपना नाम, पता, पीनकोड आदि जाँच कर लें। यदि उसमें कोई भूल हो तो आपका ग्राहक नं, पूरा नाम-पता, पीनकोड के साथ लिखकर मोबाईल नं. 8155007500 पर SMS करें। आप अडालज त्रिमंदिर के पते पर पत्र से या dadavani@dadabhagwan.org इ-मेइल आइडी पर इ-मेइल से भी सूचित कर सकते हैं। जिससे आपकी यहाँ दर्ज की गई जानकारी में सुधार किया जा सके। यदि आपको दादावाणी का अंक न मिले तो उपर दिए गए कोई भी माध्यम से हमें सूचित करें। यदि अंक स्टोक में होगा तो आपको फिर से भेजा जाएगा।

त्रिमंदिरो के संपर्क : अडालज : (079) 39830100, **राजकोट :** 9924343478, **भूज :** 9924345588, **गोधरा :** 9723707738, **मोरबी :** (02822)297097, **सुरेन्द्रनगर :** 9737048322, **अमरेली :** 9924344460,

अन्य सेन्टरों के संपर्क : अहमदाबाद: (079) 27540408, **मुंबई:** 9323528901, **वडोदरा (दादा मंदिर) :** 9924343335, **दिल्ली:** 9810098564, **बैंगलूर:** 9590979099, **कोलकता:** 9830093230

यु.एस.ए.-केनेडा: +1 877-505-DADA (3232), **यु.के.:** +44 330-111-DADA (3232), **ऑस्ट्रेलिया:** +61 421127947

आत्मज्ञानी पूज्य दीपकभाई के सांनिध्य में आगामी सत्संग कार्यक्रम

महेसाणा

4 फरवरी (शनि), शाम 7-30 से 10-30 - **सत्संग** (**टोपिक**-भ्रांत पुरुषार्थ, यथार्थ पुरुषार्थ)
5 फरवरी (रवि), शाम 5 से 8-30 - **ज्ञानविधि** तथा **6 फरवरी** (सोम), शाम 7-30 से 10-30 - **आप्तपुत्र सत्संग**
स्थल: पुलीस परेड ग्राउन्ड, सिविल होस्पिटल के पास, **महेसाणा (गुजरात).** **संपर्क :** 9408551501

अहमदाबाद

10 फरवरी (शुक्र), शाम 7 से 10 - **सत्संग** (**टोपिक**-कषाय घटाये वही धर्म)
11 फरवरी (शनि), शाम 7 से 10 - **सत्संग** (**टोपिक**-एडजस्टमेन्ट से हुए, संसार अच्छा)
12 फरवरी (रवि), शाम 5 से 8-30 - **ज्ञानविधि** तथा **13 फरवरी** (सोम), शाम 7 से 10 - **आप्तपुत्र सत्संग**
स्थल: इवेन्ट सेन्टर, टागोर होल के पीछे, रीवर फ्रन्ट रोड, पालडी, **अहमदाबाद.** **संपर्क :** 9909545999

हिंमतनगर

18 फरवरी (शनि), शाम 6 से 9 - **सत्संग** तथा **19 फरवरी** (रवि), शाम 5-30 से 9 - **ज्ञानविधि**
20 फरवरी (सोम), शाम 6 से 9 - **आप्तपुत्र सत्संग**
स्थल: मोडासीया कडवा पाटीदार समाज वाडी, सहकारी जीन चार रस्ता के पास, NH-8 **(गुज). संपर्क :** 9825823766

वडोदरा में...परम पूज्य दादा भगवान प्रेरित

निष्पक्षपाती त्रिमंदिर का भव्य प्राणप्रतिष्ठा महोत्सव

दिनांक 22 से 26 फरवरी, 2017

आत्मज्ञानी पूज्य दीपकभाई के सांनिध्य में...

सत्संग : **22 फरवरी**, शाम 4 से 4-30 - **स्वागत समारोह**, 22-24 फरवरी- शाम 4-30 से 7,
23 फरवरी, सुबह 10 से 12-30

ज्ञानविधि : **25 फरवरी**, शाम 4 से 7-30

प्राणप्रतिष्ठा : **24 फरवरी**, सुबह 10 से 12 - शिव मंदिर में स्थापित सभी भगवंत
25 फरवरी, सुबह 10 से 12 - कृष्ण मंदिर में स्थापित सभी भगवंत
26 फरवरी, सुबह 9-30 से 1 - श्री सीमंधर स्वामी, श्री कृष्ण भगवान, श्री शिव भगवान

24-25 फरवरी, सुबह प्रतिष्ठा बाद प्रक्षाल-पूजन होगा, 26 फरवरी को प्रक्षाल-पूजन शाम 4 से 7 रहेगा।
रात 9 से 10 - भक्ति/गरबा/कीर्तन भक्ति

स्थल : वडोदरा त्रिमंदिर, बाबरिया कोलेज के पास, वडोदरा-सुरत हाइ-वे, NH-8, वरणामा गाँव, **वडोदरा (गुज.).**
संपर्क : 9924343335, 9825503819

बाहर से आनेवाले महात्मा-मुमुक्षुओं की व्यवस्था हेतु खास सूचनाएँ

1) इस कार्यक्रम में भाग लेने हेतु आपको अपने नजदिकी सत्संग सेन्टर पर और यदि आपके नजदिक में कोई सत्संग सेन्टर नहीं है, तो आपको अडालज त्रिमंदिर रजिस्ट्रेशन विभाग में फोन नं. 079-39830400 (सुबह 9 से 12 तथा 3 से 6 के दौरान) पर दि. 5 फरवरी 2017 तक रजिस्ट्रेशन करवाना आवश्यक है। 2) हिन्दी भाषी महात्माओं के लिए रेडियो सेट के द्वारा हिन्दी में भाषांतर की सुविधा उपलब्ध होगी। आनेवाले महात्मा अपने साथ खुद का एफएम रेडियो और हेडफोन लेकर आए। 3) ओढ़ने-बीछाने का चद्दर, एयर पीलो, बेटरी, जरूरी दवाईयाँ साथ में लाएँ। 4) जिनके पास दादा भगवान परिवार का परमनन्ट आइ-कार्ड (पहचानपत्र) है, वे आई-कार्ड अवश्य साथ लेकर आएँ। 5) 26 फरवरी को महात्माओं के लिए ठहरने की व्यवस्था की गई हैं, इस लिए रात्रि को आयोजित विशेष भक्ति कार्यक्रम का लाभ लें।

जनवरी 2017
वर्ष - 12 अंक - 3
अखंड क्रमांक - 135

दादावाणी

Date Of Publication On 15th Of Every Month
RNI No. GUJHIN/2005/17258
Reg. No. GAMC - 1500/2015-2017
Valid up to 31-12-2017
LPWP Licence No. CPMG/GJ/15/2015
Valid up to 31-12-2017
Posted at AHD. P.S.O. Sorting Office Set - 1
on 15th of each month.

विषयों में सुखबुद्धि किसे? उसका उपाय क्या?

जो आत्मा मैंने आपको दिया है, उसकी इन पंचेन्द्रियों के विषयों में ज़रा सी भी सुखबुद्धि नहीं है। उसने यह सुख कभी चखा ही नहीं है। यह जो सुखबुद्धि है, वह तो अहंकार में है। सुखबुद्धि आत्मा की चीज़ नहीं है, वह पुद्गल की चीज़ है। तब तुम्हें कोई भी चीज़ दी जाए, तब उसमें आपको सुखबुद्धि उत्पन्न होती है। फिर से वही चीज़ और अधिक दी जाए, तब उसमें दुःखबुद्धि भी उत्पन्न हो सकती है। ऊब जाते हैं फिर। अत: वह पुद्गल है। पूरण-गलन वाली चीज़ है। यानी वह चीज़ हमेशा के लिए नहीं है, 'टेम्परेरी एडजस्टमेन्ट' है। सुखबुद्धि अर्थात् यह आम अच्छा हो और उसे फिर से माँगें, तो उससे ऐसा नहीं माना जा सकता कि उसमें सुखबुद्धि है। वह तो शरीर का आकर्षण है। उसका और आत्मा का कोई लेना-देना नहीं है। वह आपको सिर्फ आपका खुद का सुख नहीं आने देगा। सामायिक में उस विषय को लेकर ध्यान करने से वह विषय विलय होता जाता है, खत्म हो जाता है।

- दादाश्री

Printed and Published by Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation-Owner. Printed at Amba Offset, Basement, Parshvanath Chambers, Usmanpura, Ahmedabad-380014.